राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

फिल्मों में वापसी के ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

रविवार, 04 सितंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 255 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

वैक्सीनेशन से बेटी की मौत का दावा, पिता ने मांगा 1000 करोड़ रुपये का मुआवजा, बिल गेट्स और सीरम इंस्टीट्यूट को बंबई एचसी का नोटिस

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के संक्रमण के बचाव के लिए सीरन इंस्टीट्यूट द्वारा निर्मित टीका कोविशील्ड से महाराष्ट्र में एक महिला की मौत के मामले में बंबई हाईकोर्ट ने दवा निर्माता कंपनी समेत अन्य से जवाब तलब किया है। कोविशील्ड टीकाकरण के बाद लड़की की मौत के दावे को लेकर पिता ने मुआवजे के रूप में 1000 करोड़ रुपये की मांग करते हुए कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। जिसके बाद बॉम्बे हाईकोर्ट ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) और माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स को नोटिस जारी कर इस मामले में जवाब मांगा है। औरंगाबाद के रहने वाले दिलीप लूनावत ने एसआईआई और बिल गेट्स से मुआवजे की मांग को लेकर कोर्ट में यह केस दायर किया है। दिलीप का दावा है कि उनकी बेटी की मौत कोविशील्ड वैक्सीन के साइड इफेक्ट के कारण हुई। दिलीप की ओर से दायर याचिका में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, डीसीजीआई वीजी सोमानी और एम्स निदेशक का भी नाम है। दिलीप ने कोर्ट को बताया कि उनकी बेटी एक डॉक्टर थी और धमनगांव के एसएमबीटी डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में पढ़ाती थी।

दूसरी पार्टी को तोड़ना गलत, एमएलए की टूट पर बोले नीतीशः वे लोकतांत्रिक मूल्यों की धज्जियां उड़ा रहे

पटना। मणिपुर में जदयू के 6 में से 5 विधायक भाजपा में शामिल हो गए हैं। यह काम ऐसे दिन हुआ है जिस दिन जदयू की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक हो रही है। इसको लेकर जदयू भाजपा पर हमलावर हो गई है। इन सबके बीच नीतीश कुमार का भी बयान सामने आ गया है। जदयू के सर्वोच्च नेता नीतीश कुमार ने साफ तौर पर कहा है कि दूसरी पार्टियों को तोड़ना गलत है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि दूसरी पार्टी के विधायकों को तोड़कर भाजपा लोकतांत्रिक मूल्यों की धज्जियां उड़ा रही है। उन्होंने कहा कि यह संवैधानिक काम है। नीतीश ने बताया कि जब हम एनडीए से अलग हुए, तो मणिपुर के हमारे सभी छह विधायक आए और हमसे मिले और हमें आश्वासन दिया कि वे जदयू के साथ हैं। हमें यह सोचने की जरूरत है कि क्या हो रहा है। इसके साथ ही नीतीश ने दावा किया कि देश में नई राजनीति चल रही है। सभी विपक्ष एक साथ होंगे तो 2024 में अच्छे नतीजे आएंगे। उन्होंने कहा कि वे विधायकों को पार्टियों से तोड़ रहे हैं, क्या यह संवैधानिक है? विपक्ष को 2024 के चुनाव के लिए एकजुट होगा। इसके साथ ही नीतीश ने यह भी दावा किया कि वक्त आने पर वह दिल्ली भी जाएंगे। आपको बता दें कि पिछले कई दिनों से इस बात की अफवाह जोरों पर है कि नीतीश कुमार दिल्ली दौरे पर आने वाले हैं और यहां उनकी मुलाकात सोनिया गांधी, राहुल गांधी जैसे नेताओं से हो सकती है।

बीजेपी के एससी सम्मेलन में बोले अमित शाह

देशभर से धीरे–धीरे लुप्त हो रही कांग्रेस और दुनिया से कम्युनिस्ट पार्टी

तिरुवनंतपुरम। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को तिरुवनंतपुरम में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एससी सम्मेलन को संबोधित करते हुए ग्रैंड ओल्ड पार्टी श्कांग्रेसश पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि देशभर से कांग्रेस धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। इसके साथ ही उन्होंने नौसेना के नए निशान का भी जिक्र किया। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि मैं केरल के तमाम भाजपा के कार्यकर्ताओं से कहना आया हूं कि वह दिन दूर नहीं है जब केरल में भी कमल के निशान का झंडा फहरने वाला है। पूरे देशभर से कांग्रेस धीरे–धीरे जनमानस से लुप्त हो रही है और पूरी दुनिया से कम्युनिस्ट पार्टी लुप्त हो रही है। केरल में महज मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा का राजनीतिक भविष्य है। हमारे कार्यकर्ताओं को इस बात को मन में स्थान देकर पुरुषार्थ करने की जरूरत है। इसी बीच उन्होंने आईएनएस विक्रांत का जिक्र किया और कहा कि नौसेना को गुलामी की सभी निशानियों को पीछे छोड़कर अपनी वैभवशाली संस्कृति को गर्व करने वाले शिवाजी महाराज के राजचिह्न से संस्कारित एक नया निशान भी मोदी जी ने देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि मैं केरल भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं को बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं क्योंकि पूरे देशभर में काम करने के लिए राष्ट्रभक्ति चाहिए लेकिन केरल में काम करने के लिए राष्ट्रभक्ति, बलिदान की ताकत और बहादुरी तीनों चाहिए। अमित शाह ने कहा कि 2014 में जब देश की महान जनता ने मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को सरकार बनाने का मौका दिया। उस वक्त मोदी जी पहली बार सांसद बने और प्रधानमंत्री भी बने, जब वो संसद गए थे तो उन्होंने संसद की सीढ़ियों को माथे से लगाकर उन्होंने कहा था कि यह भाजपा की नरेंद्र मोदी सरकार दलित सरकार दलितों की, पिछड़ों की, गरीबों की सरकार है।

लैटिन अमेरिका में स्वामी विवेकानंद की पहली प्रतिमा

ओम बिरला ने किया अनावरण, कहा- समय से परे है उनकी शिक्षा

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मैक्सिको में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मानवता के लिए उनकी शिक्षा भौगोलिक बाधाओं और समय से परे है। ओम बिरला ने इस संबंध में ट्वीट करते हुए लिखा किमेक्सिको में स्वामी विवेकानंद की एक प्रतिमा का अनावरण करने के लिए सम्मानित किया गया। लैटिन अमेरिका में स्वामी जी की यह पहली प्रतिमा है। यह प्रतिमा लोगों के लिए विशेष रूप से क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रयास करने और परिवर्तन लाने के लिए प्रेरणा का स्रोत होगी। अपने देश को नए शिखर पर ले जाएंगे। बता दें कि ओम बिरला मेक्सिको में भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कहा, ष्मानवता के लिए स्वामी जी का संदेश और शिक्षाएं भौगोलिक बाधाओं और समय से परे हैं। उनका संदेश पूरी मानवता के लिए है। आज मेक्सिको में उनकी प्रतिमा का अनावरण कर हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दे रहे हैं। कल ओम बिरला ने मेक्सिको के चापिंगो विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी डॉ पांडुरंग खानखोजे की एक आवक्ष प्रतिमा का अनावरण किया था। बिड़ला ने लैटिन अमेरिका के सबसे पुराने कृषि विश्वविद्यालय चौपिंगो विश्वविद्यालय का भी दौरा किया। बिरला ने मेक्सिको सैंटियागो क्रेल में चौंबर ऑफ डेप्युटीज के अध्यक्ष से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने परस्पर महत्व के कई मुद्दों पर चर्चा की। भारत और मैक्सिको के ऐतिहासिक रूप से घनिष्ठ संबंध हैं और मेक्सिको पहला देश था जिसने 1947 में भारत को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी थी। आधुनिक दुनिया के लिए मेक्सिको की खोज भारत का पता लगाने के लिए शुरू किए गए एक अभियान का परिणाम थी। बिरला ने कहा कि व्यापार, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के मामले में दोनों देशों के बीच संबंध मजबूती से मजबूत हुए हैं।

देश में कोविड–19 के 7,000 से अधिक नए मामले आए, 25 मरीजों की मौत

नयी दिल्ली। भारत में एक दिन में कोविड–19 के 7,219 नए मामले आने से देश में संक्रमण के मामलों की संख्या बढ़कर 4,44,49,726 हो गई है, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 56,745 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के शनिवार सुबह आठ बजे जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, पिछले 24 घंटे में संक्रमण से 33 मरीजों की मौत होने से मृतकों की संख्या बढ़कर 5,27,965 हो गई है। वहीं, उपचाराधीन मरीजों की संख्या संक्रमण के कुल मामलों का 0.13 प्रतिशत है। कोविड–19 से स्वस्थ होने वाले मरीजों की दर बढ़कर 98.68 प्रतिशत हो गई है। आंकड़ों के मुताबिक, संक्रमण की दैनिक दर 1.98 फीसदी, जबकि साप्ताहिक संक्रमण दर 2.42 प्रतिशत दर्ज की गई है। वहीं, कोविड–19 से उबरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 4,38,65,016 हो गई है, जबकि मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत है। देशव्यापी कोविड–19 रोधी टीकाकरण अभियान के तहत अभी तक 213.01 करोड़ खुराक खुराक दी जा चुकी हैं। गौरतलब है कि देश में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी।

कविता कृष्णन को भाकपा–माले ने पदों से किया मुक्त, इसके पीठे की बताई वजह

नयी दिल्ली। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) लिबरेशन अथवा भाकपा–माले ने कविता कृष्णन को पार्टी के सभी पदों और जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया। आपको बता दें कि कविता कृष्णन भाकपा–माले के पोलिट ब्यूरो और पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्य रही हैं और उन्होंने एक सितंबर को पार्टी के पदों को छोड़ने का ऐलान किया था। हालांकि खबरें चल रही हैं कि कविता कृष्णन को पार्टी ने पद से हटा दिया है। इसी बीच कविता कृष्णन को लेकर भाकपा–माले का बयान भी सामने आया। जिसमें पार्टी ने कविता कृष्णन के प्रति किसी भी तरह की अपमानजनक टिप्पणियां करने से बचने की सलाह दी। भाकपा–माले ने ट्वीट में लिखा कि कामरेड कविता कृष्णन के सौहार्दपूर्ण वातावरण में पार्टी से अलग होने की सूचना सार्वजनिक होने के बाद हमारी पार्टी के बाहर के कुछ तत्वों द्वारा की जा रही महिला विरोधी व अशालीन ऑनलाइन ट्रोलिंग की हम कड़ी भर्त्सना करते हैं। पार्टी ने कहा कि दक्षिण पंथ की ओर से इस प्रकार का अभद्र व्यवहार नयी बात नहीं है, लेकिन हमारा उन व्यापक वाम सर्किलों से जुड़े लोगों से आग्रह है कि वे कामरेड कविता के प्रति किसी भी तरह की अपमानजनक टिप्पणियां लिखने, अथवा ऐसी पोस्टों को लाइक आदि करने से बचें।

तिरंगा लिए हुए STET अभ्यर्थी पर लाठियां भांजने वाले ADM को जांच कमेटी ने माना दोषी, एक सप्ताह में मांगा गया जवाब

पटना। बिहार की राजधानी पटना में शिक्षक भर्ती के अभ्यर्थियों पर ताबड़तोड़ लाठियां भांजने को लेकर प्रशासन सख्त नजर आ रहा है। ऐसे में पटना एडीएम के ऊपर गाज गिर सकती है। दरअसल, पटना एडीएम ने हाथ में तिरंगा लिए हुए एक अभ्यार्थी को पहले घसीटा था और फिर उसकी जमकर पिटाई की थी। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था। इस मामले को लेकर प्रशासन ने कार्रवाई की है। कारण बताओ नोटिस हुआ जारीः समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, पटना के जिलाधिकारी ने एडीएम (कानून एवं व्यवस्था) कृष्ण कन्हैया प्रसाद सिंह को एक वीडियो के संबंध में पत्र लिखकर एक सप्ताह में स्पष्टीकरण मांगा है।

आईएनएस विक्रांत संसद में पीएम मोदी को चीन का नाम लेने की ताकत देगा, ओवैसी के तंज पर बीजेपी की नसीहत– नकारात्मकता न फैलाएं

हैदराबाद। एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने भारत के पहले स्वदेशी विमानवाहक पोत तको भारतीय नौसेना को सौंपे जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि आशा है कि आईएनएस विक्रांत उन्हें संसद में चीन का नाम लेने की ताकत देगा। ओवैसी ने आरोप लगाया कि भारत को अपने समुद्री हितों की रक्षा के लिए 200 जहाजों की जरूरत है, लेकिन केवल 130 हैं। वहीं इस पर पलटवार करते हुए भाजपा ने टिप्पणी को भड़काऊ और गलत बताया और ओवैसी को राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर अधिक सभ्य होने की सलाह दी। **चीन ने 10 गांवों पर कब्जा कर लियाः ओवैसी –** बता दें कि आईएनएस विक्रांत की लॉन्चिंग के बाद ओवैसी ने तंज कसते हुए कहा था कि मुझे यह भी उम्मीद है कि यह आईएनएस विक्रांत पीएम मोदी को चीन के बारे में बोलने का साहस देगा, जिसने हमारे क्षेत्र के 10 गांवों पर कब्जा कर लिया है। आशा है कि आईएनएस उसे संसद में चीन का नाम लेने के लिए पर्याप्त ताकत देगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमें यह भी सोचना होगा कि हमें तीसरे वाहक विमान की जरूरत है, लेकिन वह (पीएम मोदी) अनुमति नहीं दे रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने देश की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया है और उनके पास पैसा नहीं है। हमें 200 जहाजों की जरूरत है लेकिन केवल 130 हैं। बीजेपी का पलटवारः तेलंगाना भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता एनवी सुभाष ने ओवैसी की टिप्पणी के लिए उनकी आलोचना की है। उन्होंने कहा कि श्ओवैसी भड़काऊ और झूठे बयान दे रहे हैं। वो कह रहे हैं कि 10 क्षेत्रों में चीन का कब्जा है। बीजेपी नेता ने कहा कि इस विशेष क्षण पर देश की सराहना करने के बजाय, ओवैसी नकारात्मकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके साथ ही सुभाष ने ओवैसी को नसीहत देते हुए कहा कि वो रक्षा विश्लेषक नहीं हैं और उन्हें अपने राजनीतिक रुख को छोड़ देश की सफलता पर खुशी मनानी चाहिए।

भाजपा नहीं छोड़ें, वहीं रहकर आप के लिए काम करें: केजरीवाल

राजकोट। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कार्यकर्ताओं से सत्तारूढ़ दल में ही रहते हुए आम आदमी पार्टी (आप) के लिए काम करने की अपील की। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल ने गुजरात के अपने दो दिवसीय दौरे के अंतिम दिन शनिवार को राजकोट में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं को भाजपा से 'पैसे'लेते रहना चाहिए लेकिन 'अंदर से ही' उन्हें आप के लिए काम करना चाहिए। केजरीवाल ने कहा कि राज्य में उनकी पार्टी के सत्ता में आने पर भाजपा कार्यकर्ताओं को भी आम लोगों को दी गई सभी "गारंटियों" का लाभ मिलेगा। आप के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा, "हम भाजपा नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल नहीं करना चाहता हूं कि इतने वर्षों के बाद भी भाजपा ने उनकी सेवा के बदले उन्हें क्या दिया?" केजरीवाल ने कहा कि भाजपा ने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं और उनके परिवार के सदस्यों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और मुफ्त बिजली जैसीसुविधाओं की पेशकश नहीं की, लेकिन आम आदमी पार्टी उनके कल्याण की परवाह करेगी। केजरीवाल ने कहा, "भाजपा कार्यकर्ता अपनी पार्टी में ही रह सकते हैं लेकिन वे आम आदमी पार्टी के लिए काम कर सकते हैं। उनमें से कई लोगों को भाजपा की ओर से पैसे दिये जाते हैं, इसलिए वहां से पैसें लें लेकिन हमारे लिए काम करें, क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं है।" आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल ने कहा, "जब हम गुजरात में सरकार बनाएंगे, हम मुफ्त बिजली देंगे और यह भाजपा कार्यकर्ताओं को भी मिलेगी। हम आपको 24 घंटे मुफ्त बिजली देंगे और आपके बच्चों के लिए अच्छे स्कूल बनाएंगे जहां उन्हें मुफ्त शिक्षा मिलेगी। हम आपके परिवार के सदस्यों के लिए मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण इलाज सुनिश्चित करेंगे और आपके परिवार में महिलाओं को भत्ते के रूप में 1,000 रुपये प्रति माह भी देंगे। केजरीवाल ने भाजपा कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए कहा कि 27 वर्षों के शासन के बावजूद भाजपा में बने रहने का कोई अर्थ नहीं है।

ढाई लाख रुपए उधार देने के बाद अपना पैसा मांगने पर एक व्यक्तिको पैसे के एवज में गाली और धमकियां मिल रही

पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक, जिलाधिकारी, एसडीएम और सीओ को प्रार्थना पत्र देकर मामले की जांच कर कार्रवाई करने की मांग की

करनैलगंज(गोंडा) । ढाई लाख रुपए उधार देने के बाद अपना पैसा मांगने पर एक व्यक्ति को पैसे के एवज में गाली और धमकियां मिल रही हैं।

कोतवाली करनैलगंज क्षेत्र के ग्राम कचना पुर निवासी पूर्व प्रधान फरियाद अहमद का कहना है कि 11 वर्ष पूर्व एक व्यक्ति को ढाई लाख रुपए ठेकेदारी करने के लिए उधार में दिए थे और लगातार तब से वह पैसा उनसे वापस मांगने के लिए दौड़ रहा है।

उसका कहना है कि इसकी शिकायत पुलिस में की गई तो पुलिस ने गलत रिपोर्ट लगाकर अधिकारियों को गुमराह किया। उसका आरोप है कि पुलिस ने रिपोर्ट लगाया कि संभ्रांत व्यक्तियों के सामने मामले का समाधान किया गया। मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है और वह जब पैसा मांगने के लिए जाता है तो उसे पैसा न देकर गालियां और धमकियां दी जाती हैं। पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक, जिलाधिकारी, एसडीएम और सीओ को प्रार्थना पत्र देकर मामले की जांच कर कार्रवाई करने की मांग की है। मामले में प्रभारी निरीक्षक सुधीर कुमार का कहना है कि मामला जानकारी में नहीं है। इस संबंध में कोई प्रार्थना पत्र प्राप्त नहीं हुआ है प्रार्थना पत्र मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

एक परिषदीय विद्यालय की शिक्षिका के पति ने छत के पंखे से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली

करनैलगंज(गोंडा) । एक परिषदीय विद्यालय की शिक्षिका के पति ने छत के पंखे से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। हालांकि पुलिस मामले की छानबीन करने में जुटी है। घटना नगर करनैलगंज के मोहल्ला कसगरान बालूगंज से जुड़ा है। यहां थाना बबिना जिला झांसी निवासी कुलदीप अपनी शिक्षिका पत्नी रचना व बच्चों के साथ किराए के घर में रहते थे। मृतक की पत्नी शिक्षा क्षेत्र हलधरमऊ अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय विशुनपुरा में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत हैं। दोपहर बाद अज्ञात कारणों से शिक्षिका के पति कुलदीप कमरे के पंखे से फांसी का फंदा बनाकर झूल गए। जिससे उसकी मौत हो गई। जब पत्नी अपने रूम पर पहुंची तो पति को लटका देख वह चीखने चिल्लाने लगी। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। नगर पुलिस चौकी प्रभारी दिवाकर मिश्रा ने बताया कि मृतक कुलदीप अपनी पत्नी व बच्चों के साथ नगर करनैलगंज के मोहल्ला बालूगंज कसगरान में किराए के मकान में रह रहा था। उसकी पत्नी शिक्षा क्षेत्र हलधरमऊ के प्राथमिक विद्यालय विशुनपुरा सहायक अध्यापक के पद पर तैनात है। अज्ञात कारणों से कुलदीप ने कमरे के अंदर पंखे के सहारे फांसी लगा लिया है। शव को पोस्टमार्टम के लिये भेजा जा रहा है। घटना के पीछे के कारणों का पता नही चल सका है। छानबीन की जा रही है।

कागजों में सिमट कर रह गया सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर राइस

उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा धान पर अनुसंधान हेतु स्थापित किया गया था कृषि विश्वविद्यालय में सेंटर आफ एक्सीलेंस

मिल्कीपुर–अयोध्या। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज में धान पर अनुसंधान हेतु स्थापित सेंटर आफ एक्सीलेंस को शासन द्वारा उपलब्ध कराए गए 2 करोड़ 23 लाख 33 हजार रुपए के सापेक्ष वित्तीय वर्ष वार व्यय किए गए धनराशि का व्यौरा उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक संजय सिंह द्वारा विश्वविद्यालय के मुख्य अन्वेषक सेंटर आफ एक्सीलेंस फॉर राइस डॉ ए के सिंह से मांग लिया गया है। डीजी उपकार संजय सिंह ने विश्वविद्यालय के मुख्य अन्वेषक को प्रेषित किए गए पत्र में अद्यतन धान की कितनी लाइंस तैयार की गई है और वर्तमान में उनका क्या स्टेटस है, उन्नतशील प्रजातियों को विकसित करने में कौन–कौन से पोषक तत्व इंटीग्रेट किए गए हैं, शोध कार्य हेतु नियुक्त किए गए 10 मानदेय कार्मिकों का विवरण, मॉली कूलर लैब की स्थापना एवं उपकरणों के क्रय में क्या कार्यवाही की गई है सहित प्रयोगशालाओं के जीर्णोद्धार का विवरण भी मांगा है। हालांकि मुख्य अन्वेषक डॉ ए के सिंह सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर राइस द्वारा बीते 17 अगस्त को महानिदेशक उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद लखनऊ से आधी अधूरी सूचना भेजी गई है जिस के क्रम में आज 2 सितंबर को पुनः महानिदेशक द्वारा एक पत्र भेजकर विस्तृत रिपोर्ट मांगी गई है।

मुख्य अन्वेषक डॉक्टर ए के सिंह द्वारा प्रेषित की गई रिपोर्ट में वित्तीय वर्ष 2018 –2019 मे प्राप्त 100 लाख के सापेक्ष 53 लाख 50 हजार9 सौ 60 रुपए तथा वित्तीय वर्ष 2019 – 2020 में प्राप्त 50 लाख रुपए के सापेक्ष 48 लाख 70 हजार 3 सौ 86 रुपए और वित्तीय वर्ष 2020 – 2021 में प्राप्त 25 लाख रुपए के सापेक्ष 24 लाख 99 हजार 9 सौ 80 रुपए व्यय शेष बचे 20 रुपए कोषागार अयोध्या में जमा करा देना, वित्तीय वर्ष 2021– 2022 में प्राप्त 25 लाख रुपए के सापेक्ष 24 लाख 99 हजार 9 सौ 95 रुपए व्यय, शेष 5 रुपए कोषागार अयोध्या में जमा कराने सहित वर्तमान वित्तीय वर्ष में प्राप्त 33 लाख 33 हजार रुपए के सापेक्ष अब तक 5 लाखों रुपए में किए जाने एवं शेष धनराशि के मौजूद होने की रिपोर्ट प्रेषित की गई है। मुख्य अन्वेषक डॉ ए के सिंह द्वारा भौतिक प्रगति से भी बिंदुवार अवगत कराया गया है, जिसमें मौलिक कूलर लेबोरेटरी की स्थापना एवं आवश्यक उपकरणों का क्रय प्रस्ताव के अनुसार किया जाना, तालाब का जीर्णोद्धार एवं 7.5 हॉर्स पावर के पंप हाउस की स्थापना, प्रयोगशालाओं का जीर्णोद्धार शोध हेतु केमिकल एवं ग्लासवेयर का क्रय एवं शोध कार्य हेतु 10 मानदेय कार्मिकों की नियुक्ति की गई एवं सीजनल मजदूरों का व्यय भार सम्मिलित है। फिलहाल मुख्य अन्वेषक द्वारा प्रेषित की गई उक्त रिपोर्ट से संतुष्ट ना होने की दशा में महानिदेशक उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद संजय सिंह द्वारा इससे इतर अन्य पांच बिंदुओं पर भी विस्तृत रिपोर्ट मांगी गई है।

कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित उक्त एक्सीलेंस सेंटर का जायजा लिया गया जहां प्रयोगशाला सहित अन्य कार्य केवल कागजों तक ही सिमटे मिले हैं। यहां तक की पुरानी प्रयोगशाला कूड़े कचरे एवं गंदगी से पटी पड़ी है जिसके जीर्णोद्धार की रिपोर्ट महज औपचारिकता निभाई जानी प्रदर्शित हुई है।

सीएमओ के आदेश की उड़ाई जा रही धज्जियां, सरकार की कर रहे छवि धूमिल,लगातार लिखी जा रही बाहरी दवाएं

रुपईडीह (गोंडा) । प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रुपईडीह पर सभी दवाएं उपलब्ध होने के बाद भी तैनात चिकित्सकों द्वारा मरीजों को बाहर की दवा धड़ल्ले से लिखी जा रही है। जबकि मुख्य चिकित्सा अधिकारी के द्वारा आदेश व स्पष्टीकरण मांगे जाने के बाद भी बाहर की दवाओं को लिखा जा रहा है जिससे गरीब असहाय तबके के लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा रहा। जहां एक तरफ प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक जनपद में एक दिवसीय दौरा कर जिला चिकित्सालय का निरीक्षण कर मरीजों को बेहतर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने एवं चिकित्सकों को द्वारा बाहर से दवा न लिखने का निर्देश दिया गया था। लेकिन सरकार की छवि धूमिल कर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रुपईडीह पर तैनात चिकित्सकों द्वारा मरीजों को धड़ल्ले से बाहर की दवा लिखी जा रही हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा अधीक्षक अजय यादव ने बताया कि केंद्र पर सभी दवाएं उपलब्ध हैं सीएमओ के द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार नोटिस भी जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है लेकिन बाहरी दवाए लगातार लिखे जाने से स्पष्टीकरण मांगते हुए विभागीय कार्रवाई की जाने की बात कही। इस संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी से दूरभाष पर संपर्क किया गया तो उन्होंने बताया कि संज्ञान में है जांच कर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

बिजली का तार टूट कर गिरने से खेत में चर रहे दो मवेशियों की मौत

करनैलगंज(गोंडा) । बिजली का तार टूट कर गिरने से खेत में चर रहे दो मवेशियों की मौत हो गई। गुस्साए ग्रामीणों ने विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाकर प्रदर्शन किया। घटना विद्युत उपकेंद्र करनैलगंज अंतर्गत ग्राम शीशामऊ की है। सुबह यहां के निवासी रामचरित्तर पंडित व राम कृपाल शुक्ला गांव के समीप खाली पड़े खेत में अपने पशुओं को चरा रहे थे। उसी बीच बिजली का तार टूट कर गिर गया। जिसकी चपेट में आकर दो पशुओं की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे लाइन मैन तार जोड़ने का प्रयास करने लगे। मौके पर मौजूद रामगोपाल शुक्ला दीपनरायन तिवारी, बलराम द्विवेदी शत्रुहन पाठक, उपेंद्र वर्मा, समसीर अहमद व उमेश्वर प्रताप शुक्ला सहित गुस्साए अन्य ग्रामीणों ने उन्हें तार जोड़ने से मना कर दिया। तथा मौके पर बिजली विभाग के विरुद्ध नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। मौके पर हल्का लेखपाल राहुल दूबे व दो पुलिस कर्मी भी मौके पर पहुंच गये। अवर अभियंता पवन कुमार ने बताया कि प्रकरण संज्ञान में विद्युत तार बदलने की व्यवस्था की जा रही है।

अवध कांट्रेक्टर एसोसिएशन की हुई बैठक

अयोध्या। स्थानीय प्रेस क्लब सभागार में अवध कांट्रेक्टर एसोसिएशन नगर निगम अयोध्या की एक बैठक हुई। बैठक में ठेकेदारों की समस्याओं को लेकर चर्चा की गयी तथा सर्व सम्मति से पदाधिकारियों का चयन किया गया। चयनित पदाधिकारियों में अध्यक्ष पद पर विजय पाण्डेय, सचिव राजेश सोनकर व संरक्षक की जिम्मेदारी वीरेन्द्र प्रताप सिंह को सौंपी गयी। इस मौके पर उपाध्यक्ष बजरंगी गौतम, कोषाध्यक्ष नरेश गुप्ता, भानू सिंह, घनश्याम साहू, वीरू सिंह, मो. उस्मान, भीम शुक्ला, अशांत सिंह, राहुल सिंह, मन्नू, सिद्धार्थ सिंह, सिंटू पाण्डेय, शुभम सिंह, सतीश पाण्डेय, शिव बहादुर सिंह, जगदीश गुप्ता, के.के. तिवारी, संतोष कुमार, अमित सिंह, रविशंकर जायसवाल, अनूप जायसवाल, नमन सोनी, अनिल तिवारी आदि लोग उपस्थित रहे।

अयोध्या के अभिनव द्विवेदी ने प्रदेश का नाम किया रोशन

अयोध्या। नाका, तिलकनगर, कल्याण सिंह वार्ड के डॉ. अभिनव द्विवेदी ने उच्चतर शिक्षा आयोग की असिस्टेण्ट प्रोफेसर अर्थशास्त्र की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रदेश एवं माता–पिता का नाम रोशन किया। अभिनव द्विवेदी ने 27 अगस्त को किसान पी. जी. कालेज बहराइच में असिस्टेण्ट प्रोफेसर का पदभार ग्रहण किया। बताते चलें कि इससे पूर्व श्री अभिनव द्विवेदी ने जुलाई 2022 में लोक सेवा आयोग की राजकीय इण्टर कालेज की परीक्षा में प्रदेश में टाप किया था। अभिनव द्विवेदी का लक्ष्य आईएएस बनकर देश की सेवा करना है। अभिनव के पिता डॉ. विश्वनाथ द्विवेदी राजकीय पीजी कालेज में हिन्दी तथा भाषा विभाग विभाग में प्रोफेसर हैड हैं। माता डॉ. अनामिका द्विवेदी एक कुशल गृहिणी एवं अभिनव की प्रेरणा स्रोत हैं। अभिनव ने अपनी सफलताओं का श्रेय माता–पिता तथा गुरूजनों को दिया है। अभिनव की शिक्षा दीक्षा जे.बी. अकादमी अयोध्या तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई है।

ट्रक से टकराई स्कूली बस, दर्जनों बच्चे हुए घायल

अयोध्या। सुबह देवकाली बाईपास पर स्कूल बस का ब्रेक फेल होने से वह एक ट्रक से टकरा गई जिससे बस में सवार करीब 12 छात्र–छात्राएं घायल हो गए, सभी घायल छात्र दृ छात्राओं का उपचार एक निजी अस्पताल में कराया गया। कोतवाल शमशेर बहादुर सिंह ने बताया कि हादसे के कारण की जांच की जा रही है। सभी चोटहिल बच्चों का इलाज कराया जा रहा है। गोसाईगंज के गद्दोपुर स्थित ग्रामर्षि अकादमी इंटरनेशनल स्कूल की 25 सीटर बस से 45 छात्र–छात्राएं एनसीसी ट्रेनिंग के लिए फैजाबाद शहर में आये थे और वापसी के दौरान देवकाली बाईपास पर अचानक बस का ब्रेक फेल हो गया, जिसके कारण स्कूल बस ट्रक से जा टकाराई। हादसे में कोई जनहानि तो नहीं हुई लेकिन एक दर्जन से अधिक बच्चे घायल हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस द्वारा स्थानीय लोगों की मदद से घायल बच्चों को नजदीक के एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां उनका प्राथमिक उपचार हुआ। गोसाईगंज में स्थित यह स्कूल भाजपा एमएलसी हरिओंम पांडेय का बताया जा रहा है।

ग्राम न्यायाल के समर्थन में किया पैदल मार्च

बीकापुर–अयोध्या। बीकापुर तहसील में ग्राम न्यायालय की यथावत बरकरार रखने के समर्थन बीकापुर के अधिवक्ताओं ने बार अध्यक्ष राम सजीवन पांडे की अगुवाई में अयोध्या – प्रयागराज हाइवे मार्ग पर पैदल मार्च कर ग्राम न्यायालय तक किया। इस दौरान सभी फोटो स्टेट व टाइपिस्ट,स्टांप बेंडर की ने भी काम काज बंद रखा। एसडीएम प्रशांत कुमार को ज्ञापन प्रेषित कर राजपाल को भेजा और कार्य बहिष्कार किया। वकीडलों के कार्य बहिष्कार के चलते मुकदमों में कोई कार्यवाही नहीं हो सकी। वादकारी तारीख नोट करके घर वापस जाने के लिए विवश हो गए। इस मौके पर श्रीकांत त्रिपाठी राम तेज वर्मा शेख मोहम्मद इस्हाक, आबाद अहमद खां,ओम प्रकाश यादव, श्याम नारायण पांडे, विजय बहादुर सिंह, बृजेश कुमार यादव लालमन पांडे अवधेश कुमार उपाध्याय तुलसीराम तिवारी लश्करी प्रसाद पांडे अवधेश कुमार वर्मा मंसाराम वर्मा हरगोविंद पटेल अवध राम यादव अवधेश कुमार निषाद महावीर गुप्ता आदि शामिल रहे।

एंबुलेंस में हुआ प्रसव, जच्चा–बच्चा दोनों स्वास्थ्य

बीकापुर–अयोध्या। बीकापुर में आपात सेवा 108 नंबर एंबुलेंस एक बार फिर वरदान साबित हुई है। बीकापुर विकास खंड क्षेत्र के ग्राम पंचायत मलेथू कनक गांव से सीएचसी ले जाते समय गांव के बाहर ही 108 नंबर एंबुलेंस के कर्मियों ने एंबुलेंस में ही सुरक्षित प्रसव करा जच्चा–बच्चा की जान बचाई। इसके बाद जच्चा–बच्चा को सीएचसी में भर्ती कराया। जहां दोनों स्वस्थ हैं। प्रसव के बाद महिला के परिजनों ने राहत की सांस ली और एम्बुलेंस में मौजूद इएमटी व मेडिकल टैक्नीशियन का आभार व्यक्त किया। बीकापुर थाना क्षेत्र के मलेथू कनक निवासी धर्म प्रताप मौर्या की पत्नी रीता देवी उम्र 35 की बीती रात प्रसव पीड़ा हुई। परिजनों ने फोन से इसकी सूचना 108 एम्बुलेंस पर दिया। सूचना के कुछ मिनट बाद एंबुलेंस आ गई। उसमें इमरजेंसी मेडिकल टेक्निशियन (ईएमटी) यादव राम और पायलट विनय वर्मा तैनात थे। ईएमटी यादव राम ने बताया कि एंबुलेंस के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचने से पहले ही मलेथू कनक गांव के पास गर्भवती की प्रसव पीड़ा बढ़ गई। गर्भवती की स्थिति बिगड़ने लगी तो पायलट ने एंबुलेंस को किनारे रोक दिया। गर्भवती की परिजन और ईएमटी की मदद से सुरक्षित प्रसव कराया। जिसके बाद गर्भवती ने अपने पुत्री को जन्म दिया।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में बनेगी कंप्यूटर लैब

मिल्कीपुर–अयोध्या। अब कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय की बालिकाएं डिस्टल तकनीकी में दक्ष होंगी। शासन ने सभी विद्यालयों में कंप्यूटर लैब को स्थापित कर बालिकाओं को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने की पहल कर उन्हें किताबी ज्ञान के साथ–साथ कंप्यूटर की तकनीकी में पारंगत बनाने का फैसला लिया है। मिल्कीपुर तहसील के तीनों ब्लॉकों अमानीगंज मिल्कीपुर वह हैरिंग्टनगंज में स्थापित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में कंप्यूटर लैब स्थापित होगा । कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में पढ़ाई कर रही बेटियां प्रारंभिक शिक्षा से ही कंप्यूटर शिक्षा ग्रहण करेंगी। प्रत्येक लैब की स्थापना में पांच पांच लाख खर्च किए जाएंगे। इस तरह तीनों विद्यालय में कुल 15 लाख रुपए कंप्यूटर लैब स्थापना में खर्च होगा। इससे 4.50 लाख रुपए सामग्री की खरीद में और 50000 हजार रुपए कमरे की साज छज्जा पर खर्च किया जाएगा। इन विद्यालयों में आधा दर्जन डेस्कटॉप कंप्यूटर, 6 यूपीएस, स्पीकर ,हेडफोन, एक लेजर प्रिंटर, लैब में विद्युत वायरिंग, ब्रॉडबैंड इंटरनेट, टेबल ,कुर्सी के साथ पर्दे रंगाई सहित आवश्यक कार्य होंगे।कस्तूरबा गांधी विद्यालय की बालिकाओं को कोडिंग, आर्टिफिशियल, इंटेलिजेंस, और मशीन लर्निंग, फाइनेंशियल इंटेलिजेंस और बिजनेस कुशाग्रता पर आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।खंड शिक्षा अधिकारी मिल्कीपुर अमानीगंज पंकज मिश्रा ने बताया कि कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में पहले से भी तीन कंप्यूटर मौजूद थे, लेकिन छात्राओं को सीखने व पढ़ने में परेशानी हो रही थी।

इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन के ट्रस्टी बने हाजी फिरोज खान गब्बर

-स्थानीय लोगों ने जताई खुशी, कहा-पांच एकड़ जमीन पर निर्माण कार्य में आयेगी तेजी

अयोध्या। सुप्रीम कोर्ट के आदेश से सोहावल स्थित ग्राम सभा धन्नीपुर में मस्जिद निर्माण के लिए मिली 5 एकड़ जमीन की निगरानी एवं निर्माण कार्यो की देखरेख के लिए बने ट्रस्ट इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन ने बीकापुर विधान सभा से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रहे हाजी फिरोज खान गब्बर को ट्रस्टी नामित किया है। इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन के सेक्रेटरी अतहर हुसैन ने पत्र जारी करते हुए बताया कि अयोध्या और उसके आस पास इनके काम और सामुदायिक सेवा के माध्यम से इंडो इस्लामिक संस्कृत विरासत को व्यवस्थित करने और सम्मान करने की अपार क्षमता को देखते हुए हाजी फिरोज खान गब्बर को इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन का ट्रस्टी नामित किया जाता है। इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन एक मस्जिद और सामुदायिक सुविधाओं के निर्माण के लिए गठित एक ट्रस्ट हैस जिसमें अस्पताल, सामुदायिक किचेन और इंडो इस्लामिक कल्चरल रिसर्च सेंटर शामिल हैस जिसमें आवंटित 5 एकड़ के प्लॉट में एक भी संग्रहालय शामिल है। हाजी फिरोज खान गब्बर के इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन का ट्रस्टी बनने पर समाजवादी पार्टी के नेता एजाज अहमद, पूर्व ब्लाक प्रमुख फिरदौस खान, पूर्व ब्लाक प्रमुख मेराज खान, राशिद जमील, रौनाही प्रधान खुर्शीद अहमद, शोएब खान, पूर्व प्रधान मिर्जा शाहिद बेग, कोला प्रधान प्रतिनिधि आजादी सिद्दीकी, पूर्व प्रधान शफीक अहमद उर्फ अल्लन ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि हाजी फिरोज खान गब्बर के ट्रस्टी बनने से सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से मिली 5 एकड़ जमीन पर निर्माण कार्य में तेजी आयेगी।

बीआरसी कार्यालय पर डंप पड़ी हैं पाठ्य पुस्तकें

तिमाही परीक्षा का समय भी आ रहा नजदीक

अयोध्या। परिषदीय विद्यालयों में तिमाही परीक्षा का समय भी आ गया है, दिसंबर माह के अंत में तिमाही परीक्षाएं प्रस्तावित है ,लेकिन अभी तक सभी बच्चों को सरकार की ओर से निशुल्क किताबें उपलब्ध नहीं हो सकी है। अप्रैल माह में नया शैक्षणिक सत्र शुरू होने के बाद से विद्यार्थी पुरानी किताबों से ही काम चला रहे थे। करीब 5 माह बाद मिल्कीपुर खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय पर कुछ किताबें प्राप्त हुई है। लेकिन अभी तक स्कूलों तक नहीं पहुंच सकी है। मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र के अमानीगंज, हैरिंग्टनगंज व मिल्कीपुर विकासखंड के 475 परिषदीय विद्यालयों में 61208 विद्यार्थी पंजीकृत है, शासन द्वारा सभी छात्र छात्राओं को किताबें वितरित करनी हैं। जबकि अभी तक मिल्कीपुर में कक्षा 1से कक्षा 8 तक हिंदी,संस्कृत,अंक गणित व पर्यावरण के ही किताबें आई है ,वह भी अभी बीआरसी कार्यालय पर रखी हुई है। अमानीगंज शिक्षा क्षेत्र परिषदीय विद्यालयों में दी जाने वाली 70 प्रशित किताबे आ गई है ,जिन का वितरण 2 दिन बाद करा दिया जाएगा। हैरिंग्टगंज क्षेत्र में कक्षा एक से कक्षा 8 तक प्राप्त हिंदी, संस्कृत ,पर्यावरण, अंकगणित किताबों का 26 विद्यालयों में वितरण कर दिया गया। फिलहाल अभी सभी विषय की किताबे छात्र छात्राओं को नहीं मिल सकी है। परिषदीय विद्यालयों के प्रति बच्चों का आकर्षण बढ़ाने के लिए ऑपरेशन कायाकल्प के तहत इन स्कूलों को अंग्रेजी स्कूलों की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। इन विद्यालयों में बच्चों का अधिक से अधिक प्रवेश दिलाने के लिए विभाग द्वारा स्कूल चलो अभियान भी चलाया जाता है। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित परिषदीय स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शासन द्वारा निशुल्क किताबें उपलब्ध कराई जाती है, इसके साथ ही उन्हें स्कूल ड्रेस व जूता–मोजा के लिए भी धनराशि उपलब्ध कराई जाती है। बीते दो सत्रों से इन बच्चों को समय पर किताबें ही नहीं मिल पा रही है ,वहीं इस वर्ष सितंबर माह में किताबें आना शुरू हुई है अभी तक सभी किताब नहीं आई है ,जबकि इसी माह के अंत तक तिमाही परीक्षा भी होनी है।खंड शिक्षा अधिकारी पंकज मिश्रा ने बताया कि जो किताबें प्राप्त हो गई हैं उनका जल्द वितरण कराया जाएगा।

साकेतवासी महंत सर्वेश्वर दास को संतों ने दी श्रद्धांजलि

अयोध्या। आचार्य पीठ तपस्वीजी की छावनी, रामघाट में गुरूवार सायंकाल शोकसभा का आयोजन हुआ, जिसमें संत–धर्माचार्यों ने साकेतवासी महंत सर्वेश्वर दास महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। सभा की अध्यक्षता दिगंबर अखाड़ा महंत सुरेश दास व आयोजन–संचालन वर्तमान तपस्वी छावनी पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने किया। महंत सुरेश दास ने कहा कि तपस्वी छावनी अयोध्या की सबसे पुरानी छावनी है। यहां के महंत बलुइया बाबा बहुत ही तपस्वी संत थे। उनके साकेतवास बाद सर्वेश्वर दास यहां के महंत बने। जो आज हम लोगों के बीच में नही हैं। उनका साकेतवास हो चुका है। वह विद्वान और त्यागी पुरुष थे। उन्होंने आजीवन तपस्वी छावनी परंपरा का निर्वाहन किया। वह अप्रतिम प्रतिभा के धनी संत थे।

रामकथा मंडप के महंत रामानंद दास ने कहा कि साकेतवासी महंत सर्वेश्वर दास महाराज महापुरुष थे। उनका स्वभाव बहुत ही सरल रहा। वह सबसे बहुत ही सरलता एवं विनम्रता के साथ मिलते थे। उनका जीवन त्याग पूर्ण रहा है। वह सशरीर हम लोगों के बीच नही हैं। लेकिन उनकी यश और कीर्ति सदैव रहेगी। हिंदू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अधिवक्ता मनीष पांडेय ने महंत सर्वेश्वर दास महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह सच्चे अर्थों में एक तपस्वी थे, आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण होने के साथ–साथ वे समाज में घटने वाली प्रत्येक घटनाओं पर अपनी गहने दृष्टि रखते थे, उनके साथ अक्सर अध्यात्मिक, तथा अन्य मुद्दों पर अक्सर चर्चाएं होती रहती थी।

श्री पांडेय ने यह भी कहा कि महंत सर्वेश्वर दास जी महाराज के पास व्यक्ति को पहचानने की अद्भुत क्षमता थी, निश्चित रूप से उनका जाना ना सिर्फ संत समाज का, बल्कि आध्यात्मिक जगत की एक अपूरणीय क्षति है। शोक सभा में हनुमान बाग महंत जगदीश दास, जगन्नाथ मंदिर अहमदाबाद महंत दिलीप दास, हनुमानकिला महंत रामभजन दास, वैद्य मंदिर महंत राजेंद्र दास, कनक महल महंत सीताराम दास महात्यागी, महाविरक्त आश्रम महंत माधवदास रामायणी, सरयू मंदिर महंत रामअवध दास, रामलीला निवास महंत चंद्रशेखर दास, राष्ट्रीय रामकथा मर्मज्ञ चंद्रांशु महाराज, करतलिया भजनाश्रम महंत बालयोगी रामदास, महंत अंगद दास, महंत अभिराम दास, रावत मंदिर महंत राममिलन दास, स्वामी छविराम दास, महंत सच्चिदानंद दास, महंत रामकिशोर दास, महंत गंगादास, सनातन मंदिर महंत मुकेश दास, आचार्य शशिकांत दास, महंत हरिभजन दास, महंत राजकुमार दास, पुजारी ओमप्रकाश दास, महंत प्रेमदास हरिद्वार, भरत दास, चंदा बाबा, मामा दास हनुमानगढ़ी, महेंद्र भाई झा गुजरात आदि संत–महंत व विशिष्टजन उपस्थित रहे। उन्होंने भी साकेतवासी महंत के प्रति अपनी वाक् पुष्पांजलि अर्पित की। सभा के अंत में संत–महंतों ने दो मिनट का मौन रखा।

सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस तहसील इटवा में आयोजित, 68 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। शासन के मंशा के अनुरूप प्रत्येक माह के प्रथम एवं तीसरे शनिवार को सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। तहसील इटवा में प्रभारी जिलाधिकारीध्मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की अध्यक्षता तथा पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द की उपस्थिति में तहसील समाधान दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तहसील इटवा में आयोजित सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस के आयोजन के अवसर पर राजस्व, विकास, शिक्षा, पूर्ति एवं अन्य विभागों के शिकायतों की सुनवाई प्रभारी जिलाधिकारीध मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार, उपजिलाधिकारी इटवा विकास कश्यप द्वारा किया गया तथा पुलिस विभाग से सम्बन्धित प्रार्थना पत्रों की सुनवाई पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द द्वारा किया गया। प्रभारी जिलाधिकारीध्मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार ने सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस इटवा में उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप गरीबों, असहायों को उचित एवं त्वरित न्याय दिलाये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें। किसी भी पीड़ित व्यक्ति को उचित न्याय दिलाना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है।

किसी भी विभाग का तहसील दिवस का कोई भी प्रकरण लम्बित नही होना चाहिए यदि किसी भी भी विभाग का प्रकरण लम्बित पाया जायेगा तो सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस में कुल 68 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत हुए जिसमें राजस्व–35, पुलिस विभाग से सम्बन्धित–11, विकास–04, विद्युत–08, पूर्ति–03 तथा अन्य–07 मामले प्रस्तुत हुए। जिसमें राजस्व–04 व 01 अन्य विभाग के प्रार्थना–पत्रों को प्रभारी जिलाधिकारीध्मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार द्वारा मौके पर ही निस्तारित करा दिया गया। तहसील दिवस में अवशेष शिकायती प्रार्थना पत्रों को तीन दिवस के अन्दर शत–प्रतिशत निस्तारण की कार्यवाही सम्बन्धित विभाग के अधिकारी सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस कार्यक्रम के अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 विनोद कुमार अग्रवाल, तहसीलदार इटवा, जिला विकास अधिकारी शेषमणि सिंह, उप कृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा, बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी मेघवरण, जिला पूर्ति अधिकारी बृजेश कुमार मिश्र, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला पंचायत राज अधिकारी आदर्श, जिला समाज कल्याण अधिकारी डॉ0 राहुल गुप्ता, तहसील इटवा क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त थानाध्यक्ष एवं खण्ड विकास अधिकारी तथा अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

त्वरित कृषि अवशेष कंपोस्टिंग टेक्नोलॉजी पर ग्रामीणों को मिला प्रशिक्षण

एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर/सिद्धार्थनगर। त्वरित कृषि अवशेष कंपोस्टिंग टेक्नोलॉजी पर दिया गया प्रशिक्षण ग्राम मधवापुर के 30 प्रगतिशील कृषकों को किया गया प्रशिक्षि आज दिनांक शनिवार को कृषि विज्ञान केंद्र सोहना पर कृषकों को त्वरित कृषि अवशेष कंपोस्टिंग टेक्नोलॉजी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। कृषि विज्ञान केंद्र सोहना के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ ओम प्रकाश ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सुक्ष्म ब्यूरो मऊ के प्रधान वैज्ञानिक एवं डीबीटी बायोटेक किसान परियोजना अन्वेषक डॉ वी. मागेश्वरन को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। डॉ वी. मागेश्वरन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ कर प्रगतिशील किसानों को प्रशिक्षण दिया जिसमें उन्होंने रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक आधारित कृषि प्रथाओं को कम कर मृदा में कार्बन पदार्थ में वृद्धि करने से स्वास्थ्य में सुधार और पौधों के विकास और वृद्धि में मदद करने वाले फायदेमंद सूक्ष्म जीवों की जनसंख्या में वृद्धि होती है द्य यह भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान वेस्ट टू वेल्थ और मृदा स्वास्थ्य मिशन के बराबर है डॉ ओम प्रकाश ने अपने व्याख्यान में इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य उत्पादकता के कारकों अर्थात पानी मिट्टी बीज खाद और बाजार के संबंध में किसानों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं का पता लगाना और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ स्थानीय तरीके से इन समस्याओं का समाधान करना है और इस कंपोस्ट का गुणवत्ता उन्नयन लाभकारी सूक्ष्मजीवों के संवर्धन द्वारा उत्पादित बायोफोर्टीफाइड गुणवत्ता युक्त कंपोस्ट का इस्तेमाल किसान भाई अपने खेतों में अपनाकर ना सिर्फ खेतों में उत्पादन की लागत को कम कर सकते हैं बल्कि कंपोस्ट को बेचकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। डी बी टी किसान बायोटेक परियोजना के सह अन्वेषक डॉ प्रदीप कुमार, डॉ शेष नारायण सिंह और डॉ मार्कंडेय सिंह, डॉ एस के मिश्रा डॉ सर्वजीत, कृषि वैज्ञानिक प्रवेश कुमार ने भी प्रगतिशील कृषकों को प्रशिक्षित किया।

एक दिवसीय ट्रेनिंग में 30 किसानों को प्रशिक्षण में दुर्गा प्रसाद परमात्मा प्रसाद मिश्रा आशुतोष चिंकू रामअचल इंद्रजीत कमलेश मौर्य शिव गोविंद प्रभु दीन सुखसागर हरिराम रामधनी आदि किसानों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

सौरभ गुप्ता ने निर्माणाधीन हॉल का किया निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। स्थानीय सरस्वती शिशु एवं विद्या मंदिर में नगर पंचायत द्वारा सुभाष सभागार का निर्माण कराया जा रहा है। हॉल में लगे टायल्स आदि की गुणवत्ता और व्यवस्था को लेकर अध्यक्ष प्रतिनिधि सौरभ गुप्ता ने निर्मित (हॉल) का निरीक्षण किया, ताकि नवनिर्मित हॉल को लोगों को सुपुर्द किया जा सके। हॉल का निरीक्षण कर रहे अध्यक्ष प्रतिनिधि सौरभ गुप्ता ने निर्माणाधीन कार्य को तय सीमा के अन्दर निर्माण करने का निर्देश दिया है। विदित हो सुभाष हॉल का शिलान्यास 20 जनवरी 2020 को नगर अध्यक्ष बबिता कसौधन व सांसद जगदंबिका पाल व निवर्तमान विधायक चौधरी अमर सिंह की उपस्थिति में किया गया था, जिसका कुछ ही दिनों में लोकार्पण होना है। इस दौरान मनोज तिवारी, लाला गौड़ आदि मौजूद रहे।

कोटेदार को कालाबाजारी करते उपजिलाधिकारी ने पकड़ा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। शुक्रवार रात्रि लगभग 9.00 बजे दूरभाष पर उपजिलाधिकारी सदर को किसी ने अवगत कराया की धेंसानानकार के कोटेदार महेश द्वारा कालाबाजारी की नीयत से सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान में गेहूं एवं चावल के बोरे से गेहूं, चावल निकाल कर अलग बोरे में पैक किया जा रहा है। प्राप्त सूचना पर तत्काल उपजिलाधिकारी नौगढ़ प्रदीप यादव के नेतृत्व मे राजस्व टीम व आपूर्ति विभाग की टीम द्वारा छापा मारा गया. मौके पर सत्यापन में 19 बोरी गेहूं मिला एवं 57 बोरी चावल अतिरिक्त प्राप्त हुआ, जिसे सील कर दिया गया. उक्त सामग्री को शनिवार को कार्रवाई करते हुए ए.आर.ओ बृजेंद्र की उपस्थिति में आपूर्ति विभाग द्वारा अपनी सुपुर्दगी में लेकर अन्यत्र शिफ्ट कर दिया गया। मौके पर तहसीलदार नौगढ़ राम ऋषि रमन, क्षेत्रीय राशनिंग अधिकारी बृजेंद्र, पूर्ति निरीक्षकगण, लेखपाल शिव शंकर यादव, बिंदुसार मौर्य, अशोक यादव आदि मौके पर उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायत रमवापुर खास सचिवालय में गाँव के विकास का खांका तैयार

सचिव व ग्राम प्रधान की उपस्थिति में ग्राम पंचायत रमवापुर खास के सचिवालय में हुई बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। विकास खण्ड के ग्राम पंचायत रमवापुर खास स्थित सचिवालय में ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत

सदस्यों सहित ब्लॉक कर्मचारियों की उपस्थिति में एक आवश्यक बैठक बुलाई गई, जिसमें ग्राम पंचायत के विकास को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक को ग्राम विकास अधिकारी राम स्वरूप गुप्ता, कृषि टेक्नीशियन विनीत पाठक, रोजगार सेवक कुलदीप गिरि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इन दौरान पंचायत सहायक कृषमोहन गिरि, रामकुमार, दिनेश, शेषराम, मोहम्मद रफीक, अजीज, इब्राहिम, मो सई, कुरैश, रीता, सुन्दरी, राजाराम, अकबर आदि मौजूद रहे।

विहिम के नगर अध्यक्ष बने सर्वेश वर्मा एव महामंत्री बने गिरजेश

विश्व हिन्दू महासंघ ककरहवा नगर कार्यकारिणी का हुआ गठन

दैनिक बुद्ध का संदेश

ककरहवां/सिद्धार्थनगर। ककरहवां कस्बे में स्थित वर्मा मैरेज हाल में विश्व हिन्दू महासंघ की एक आवश्यक बैठक जिला अध्यक्ष अधिवक्ता अखण्ड प्रताप सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बैठक में ककरहवा कस्बे के नगर इकाई के कार्यकारिणी का गठन किया गया। सर्वसम्मति से विश्व हिन्दू महासंघ के ककरहवा का नगर अध्यक्ष सर्वेश वर्मा, महामंत्री गिरजेश वर्मा, उपाध्यक्ष राजू जायसवाल, सुशील मिश्रा, विशाल मोदनवाल, संगठन मंत्री सुरेंद्र वर्मा, कोषाध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रहरि, मीडिया प्रभारी सन्दीप अग्रहरि, संयुक्त मंत्री विवेक जायसवाल एव संरक्षक विश्वनाथ वर्मा, त्रियुगी वर्मा मनोनीत किया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अखण्ड प्रताप सिंह ने मनोनीत किये पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठन को

मजबूत बनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि जिस तरह जब कोई अकेला होता है तो उसे हर तरफ से प्रताड़ना मिलती है, लेकिन जब वही अकेला व्यक्ति कई लोगो के समूह में होता है तो कोई भी व्यक्ति उसे प्रताड़ित नही कर सकता। इसिलिए सभी को संगठित होकर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्व हिन्दू महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष जी का आगमन 13 सितम्बर को जनपद में हो रहा है, और उनके आगमन को ऐतिहासिक बनाने के लिए तैयारियां जोरों से चल रही है। उन्होनें कहा कि संगठन में ही शक्ति है। इस अवसर ओर धर्माचार्य अधिवक्ता कृपा शंकर त्रिपाठी ने कहा कि हम सब की जिम्मेदारी है कि अपने धर्म एव संस्कृति का रक्षा करना हम सब का कर्तव्य है। हिन्दू हितों के लिए तन मन धन से हम लोग लगे हुए। जिसमे सभी की जिम्मेदारी है कि हिन्दू हितों की रक्षा के लिए सभी को आगे आना होगा। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष त्रियुगी चौहान, अधिवक्ता प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष अनिल विश्वकर्मा, ब्लाक अध्यक्ष बर्डपुर अमन जायसवाल, नगर अध्यक्ष कपिलवस्तु राजन मोदनवाल, शोहरतगढ़ कार्यकारी अध्यक्ष राकेश मिश्रा, अवनीश, अस्वनी, आकाश शुक्ला, सन्दीप, विवेक जायसवाल, दुर्गेश जायसवाल, अशोक कुमार, राधेरमण चौधरी, सन्तोष, राजू जायसवाल, अजय, गणेश, माधव, राजकुमार, दिलीप, दुर्गा प्रसाद, बुद्धिराम, बलिराम, सुरेंद्र, मनोज, राधेश्याम, शिवम, निखिल, लक्ष्मण, अखिलेश, विश्वनाथ सहित भारी संख्या में लोग बैठक में शामिल रहे।

भनवापुर प्रधान संगठन की बैठक सम्पन्न,जरूरत पड़ी तो होगा धरना प्रदर्शन

प्रधानों का उत्पीडन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा लालजी शुक्ला

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर/सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय पंचायती राज ग्राम प्रधान संगठन के भनवापुर ब्लॉक अध्यक्ष लाल शुक्ला की अगुवाई मे भनवापुर ब्लाक सभागार कक्ष में एक आवश्यक बैठक दिन में 1बजे आहूत की गई। बैठक के मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष पवन मिश्रा ने प्रधानों को संबोधित करते हुए कहा कि संगठन ग्राम प्रधानों के लिए कवच का कार्य कर रहा है। ग्राम प्रधान अपने पद और कार्य के बारे में अवश्य समझे और जरूरत पड़ने पर आवाज उठाते रहे। मंडल व्यास पांडे ने कहा

कि प्रधानों का उत्पीड़न करने वालों को चिह्नित किया जाएगा और जरूरत पड़ी तो धरना प्रदर्शन भी किया जाएगा। बैठक के विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि लवकुश ओझा ने कहा कि प्रधानों का उत्पीड़न करने वाले को कड़ा जवाब दिया जाएगा और अगर ब्लॉक पर किसी प्रधान को किसी तरह की कोई समस्या होती है तो वह हमसे व ब्लॉक अध्यक्ष से बताएं उनकी समस्याओं का निस्तारण किया जाएगा। ब्लॉक अध्यक्ष अरविंद उर्फ लाल जी शुक्ला ने कहा कि ग्राम प्रधानों के शिकायत पर त्वरित निर्णय लिया जाए और पक्के का बकाया भुगतान कराया जाए आवश्यकता पड़ने पर पक्के कच्चे कार्यों की स्वीकृति प्रदान की जाए। रोजगार सेवक व पंचायत सहायक के अनाधिकृत हस्तक्षेप को रोका जाए। और अंत में कहा कि हमारे प्रधान भाइयों को अगर कहीं से दिक्कत होती है तो उसके लिए पूरे जिले के साथ–साथ प्रदेश स्तर के पदाधिकारी भी धरने पर बैठने का कार्य करेंगे। बैठक मे भीम चौधरी, सुनील पाठक, नफीस मलिक उर्फ गुड्डू, साबित्री देवी, कल्पना यादव,खान नसीबुल्लाह, रमेश गुप्ता, मंटू गुप्ता, उमा नाथ मिश्र,चंद्रभान,पूनम देवी सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

असल मे ऐसे नेता कोई समाधान नहीं, बल्कि कांग्रेस की आज की समस्या का एक बड़ा कारण हैं। उन्हें उनके फैसले पर छोड़ कर पार्टी को अपनी नई राह पर आगे बढना चाहिए। इस राह में उसे नए साथी और नए रहबर मिलेंगे। इस राह में पार्टी को नई ताकत और नई जान मिलने की पूरी संभावना है। शर्त ...

कांग्रेस के पॉवर ब्रोकर

जब कांग्रेस ने समझ लिया है कि वर्तमान दौर में विपक्ष की भूमिका निभाने के लिए सड़कों पर उतरना ही रास्ता है, सुख–सुविधा बढ़ाने के मकसद से राजनीति में लोगों का अलग रास्ता ढूंढना स्वाभाविक ही है।भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सौवीं वर्षगांठ के मौके पर दिसंबर 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि कांग्रेस में सत्ता के दलालों (पॉवर ब्रोकर्स) ने गहरी पैठ बना ली है, जिनसे पार्टी को मुक्त कराना उनका मकसद है। बाद का अनुभव यह रहा कि राजीव गांधी पार्टी से पॉवर ब्रोकर्स को तो दूर नहीं कर पाए, उलटे सत्ता के दलालों ने उन्हें अपने गहरे प्रभाव में ले लिया। तब से कांग्रेस के कर्ता–धर्ता पॉवर ब्रोकर्स और दरबारी ही रहे हैं।

उन ब्रोकर्स ने कभी नहीं सोचा होगा कि एक दिन असल में पार्टी के पास सत्ता ही नहीं रहेगी। अधिक से अधिक उनका अनुमान यह होगा कि आम लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत अगर कभी पार्टी सत्ता से बाहर हुई, तो फिर अगले चुनावी चक्र में वापस भी आ जाएगी। उन्हें इसका तो कतई भान नहीं रहोगा कि एक दिन एक ऐसी सरकार बन जाएगी, जिसे आम चुनावी लोकतांत्रिक प्रक्रिया से हराना दुष्कर नजर आने लगेगा और विपक्ष में रहना जोखिम भरा हो जाएगा। अब जबकि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने समझ लिया है कि वर्तमान सरकार के दौर में विपक्ष की भूमिका निभाने के लिए सड़कों पर उतरना और लंबी पद यात्रा पर जाना ही रास्ता है, तो जो लोग सुख–सुविधा कायम रखने और उसे बढ़ाने के मकसद से राजनीति में आए हैं, उनका अपने लिए अलग स्थान और रास्ता ढूंढना स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इसीलिए कांग्रेस को गुलाम नबी आजाद, कपिल सिब्बल, उनके पहले कई दूसरे नेताओं के पार्टी छोडने और आनंद शर्मा जैसे नेताओं की नाराजगी पर शोक नहीं मनाना चाहिए। असल मे ऐसे नेता कोई समाधान नहीं, बल्कि कांग्रेस की आज की समस्या का एक बड़ा कारण हैं। उन्हें उनके फैसले पर छोड़ कर पार्टी को अपनी नई राह पर आगे बढना चाहिए। इस राह में उसे नए साथी और नए रहबर मिलेंगे। इस राह में पार्टी को नई ताकत और नई जान मिलने की पूरी संभावना है। शर्त सिर्फ यह है कि इस राह पर कांग्रेस ईमानदारी और पूरी गंभीरता से चले। राहुल गांधी ने इसे तपस्या कहा है, तो उम्मीद है कि वे और उनके साथी इसमें खरा उतरने के लिए बलिदान देने को तैयार होंगे, जो पॉवर ब्रोकर्स के वश की बात नहीं है।

तो वो सच क्या है?

सवाल तो यह उठा है कि अगर सरकार अपने रुख को लेकर इतना आश्वस्त है, तो उसने सुप्रीम कोर्ट की तरफ से बनाई गई समिति की जांच में सहयोग क्यों नहीं किया? वैसे भी मामले पर पूरा फैसला अभी हुआ नहीं है। केंद्र सरकार और सत्ताधारी पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट की दिप्पणियों का हवाला देते हुए दावा किया है कि पेगासस विवाद बेबुनियाद था। बल्कि पार्टी नेता रविशंकर प्रसाद ने तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी से यह मांग कर दी कि इस मामले में देश को गुमराह करने के लिए वे माफी मांगे। जबकि सुप्रीम कोर्ट यह भी कहा था कि पेगासस जांच में केंद्र ने सहयोग नहीं किया। वैसे भी जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट बंद लिफाफे में सुप्रीम कोर्ट को सौंपी है। उस रिपोर्ट में क्या है, यह कोर्ट के अलावा किसी को नहीं मालूम। तो फिर यह कहने का क्या आधार हो सकता है कि इस मामले में सरकार का रुख सही पाया गया है। बल्कि असल सवाल तो यह उठा है कि अगर सरकार अपने रुख को लेकर इतना आश्वस्त है, तो उसने सुप्रीम कोर्ट की तरफ से बनाई गई समिति की जांच में सहयोग क्यों नहीं किया? वैसे भी मामले पर पूरा फैसला अभी हुआ नहीं है। बीते 25 अगस्त को अदालत में इस मामले की जांच कर रही तकनीकी समिति ने अपनी रिपोर्ट बंद लिफाफे में अदालत को दी। अदालत ने रिपोर्ट को खोला, उसमें से कुछ अंश पढ़े और उसे दोबारा सील कर दिया। फिर उसे सुप्रीम कोर्ट के महासचिव के पास सुरक्षित रख दिया गया और जो जब अदालत ने जरूरत महसूस की, रिपोर्ट उसे उपलब्ध कराएंगे। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार अदालत ने जो अंश पढ़े उनमें लिखा था कि तकनीकी समिति ने 29 मोबाइल फोनों की जांच की थी और उनमें से पांच में गड़बड़ी करने वाला सॉफ्टवेयर पाया तो गया। इस सॉफ्टवेयर के पेगासस होने का कोई सबूत नहीं मिला। रिपोर्ट को सार्वजनिक करने के विषय पर अदालत ने कहा कि जिन लोगों के फोनों की जांच की गई है, उनमें से कईयों ने अपील की है कि रिपोर्ट को सार्वजनिक ना किया जाए, क्योंकि उसमें उनके फोन से प्राप्त उनका निजी डेटा भी है। लेकिन कुछ याचिकर्ताओं की यह गुजारिश जायज है कि रिपोर्ट को एडिट कर कम से कम उनके साथ तो उसे साझा कर दिया जाए। ऐसा नहीं हुआ, तो रहस्य बना रहेगा। जाहिर है, संदेह भी कायम रहेंगे।

झारखण्ड में राजनैतिक उथल-पुथल

उन्होंने यह भी कहा कि मोदी सरकार अपने इरादों में सफल नहीं होगी। उनके खिलाफ अभियान तो चलाया जा सकता है, किन्तु जनमत को खरीदा नहीं जा सकता । उन्होंने कहा कि जनमत हमारे दल के समर्थन में है । ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार को जनता को यह आश्वासन दिलाना है कि यह अभियान हेमंत सोरेन को बदनाम करने के लिए नहीं चलाया जा रहा है, बल्कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को ...

अजय दीक्षित

झारखण्ड की राजनीति में अचानक अंध ाड़ आ गया है । मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन लाभ के पद के तहत दागी पाये गये हैं । आश्चर्य है कि खुद मुख्यमंत्री और खनन मंत्री ने अपने नाम पत्थर खनन का पट्टा लिखवा लिया, लेकिन जब विपक्ष ने तमाम दस्तावेज और साक्ष्य सार्वजनिक कर दिये और राज्यपाल तक शिकायत पहुंच गई, तो लाभ के पत्थर छोड़ भी दिये । इतने नासमझ हैं मुख्यमंत्री सोरेन और इतने बेवकूफ सरकार के आला अफसर और मुख्यमंत्री के सलाहकार हैं! हेमंत सोरेन पहले भी मुख्यमंत्री रहे हैं । विधायकी के कायदे–कानून भी उन्होंने पढ़े होंगे कि किसी भी तरह की लाभ की खदान भ्रष्टाचार का ही पर्याय है । इसी आरोप में उनके पिता शिबू सोरेन को इस्तीफा देना पड़ा था । बहरहाल आज वह राज्यसभा सांसद हैं । सोनिया गांधी को 2006 में सांसदी से इस्तीफा देना पड़ा था, क्योंकि यह यूपीए सरकार में राष्ट्रीय सलाहकार परिषद की अध्यक्ष थीं । इस पद में संशोध ान किया गया । उन्हें दोबारा लोकसभा चुनाव जीत कर संसद में लौटना पड़ा । इसी तरह जया बच्चन उप्र फिल्म विकास निगम की अध्यक्षा थीं, लिहाजा उन्हें भी राज्यसभा की सदस्यता गंवानी पड़ी । हेमंत सोरेन ने तो लाभ की खदान के लिए बाकायदा आवेदन किया था । अपने अधीन मंत्रालय से जून, 2021 में उसे मंजूरी दिलाई गई। सितंबर तक पर्यावरण संबंधी प्रावधान

भी पास करवा लिये गये । उन्होंने पत्थर खनन से मुनाफा कमाया अथवा कुछ भी हासिल नहीं किया, लेकिन संवैधानिक पद का दुरुपयोग तो किया और सत्ता के साथ–साथ खननकारी बनकर माल कमाने का बन्दोबस्त जरूर किया था यही बुनियादी तौर पर अपराध था । वैसे झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) का भ्रष्टाचार से पुराना नाता रहा है । केन्द्र में पीवी नरसिंह राव सरकार के पक्ष में बहुमत के जुगाड़ के मद्देनजर तत्कालीन झामुमो नेताओं–शिबू सोरेन और सूरज मंडल आदि ने नकदी घूस कबूल की थी और पैसे को दिल्ली के बैंकों में ही जमा करवा दिया था । अदालत उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई नहीं कर सकी, क्योंकि उसे संसद के भीतर का घटनाक्रम मान लिया गया । लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री को अभियुक्त नंबर वन अदालत ने घोषित किया था और विज्ञान भवन में विशेष अदालत का निर्माण किया गया था। बहरहाल अब मुख्यमंत्री सोरेन की कुर्सी संकट में है । चुनाव आयोग ने जनप्रतिनिधित्व कानून, 1951 के तहत जो अनुशंसा राज्यपाल रमेश बैंस को भेजी है, महामहिम उसे स्वीकार करने को बाध्यकारी हैं। चूंकि सम्पादकीय लिखने तक राज्यपाल का फैसला और अधिसूचना सार्वजनिक नहीं हुए थे, लिहाजा यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि आयोग ने 6 साल के लिए सोरेन को अयोग्य करार दिया है अथवा मुख्यमंत्री को इस्तीफा ही देना पड़ेगा, क्योंकि उनकी विधायकी रद्द कर दी गई है। ऐसे में सोरेन उच्च न्यायालय अथवा सर्वोच्च अदालत में चुनाव आयोग के फैसले को चुनौती दे सकते हैं । यह भी सम्भव है कि सोरेन के इस्तीफे से जो सीट खाली होगी, उसी पर वह उपचुनाव जीत कर फिर विधायक बन सकते हैं । नतीजतन विधायक दल उन्हें मुख्यमंत्री भी चुन सकता है । उस स्थिति में राज्यपाल के लिए उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाना बाध्यकारी होगा । बहरहाल इस अंधड़ के बावजूद झारखण्ड में राजनीतिक समीकरण बदलने वाले नहीं हैं, क्योंकि झामुमो गठबंधन के पास कुल 52 विधायकों का समर्थन है। विधानसभा में कुल सदस्य 82 हैं। विपक्षी भाजपा के कुल 30 विधायक हैं। अलबत्ता भाजपा गठबंधन गदगद है, क्योंकि मुख्यमंत्री को बेनकाब करने की उनकी रणनीति कामयाब रही है। बिहार के बाद झारखंड भाजपा के लिए बेहद संवेदनशील राज्य है, क्योंकि लोकसभा चुनाव में उसे 51 फीसदी से ज्यादा वोट मिले थे भाजपा उसी चुनावी स्वीकृति के माहौल को जिन्दा रखना चाहती है । राज्यपाल क्या फैसला सुनाते हैं और स्पीकर मुख्यमंत्री को अदालत में चुनौती देने के नाम पर कितना समय देते हैं और सोरेन वैकल्पिक मुख्यमंत्री के तौर पर किसका चयन करते हैं, ये घटनाक्रम देखने के बाद ही आकलन किया जा सकेगा कि झारखण्ड की राजनीति किस दिशा में बढ़ती है । उध ार, हेमंत सोरेन ने भाजपा पर आरोप लगाया है कि उन्हें बदनाम करने के लिए उनके खिलाफ दुष्प्रचार किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि मोदी सरकार अपने इरादों में सफल नहीं होगी। उनके खिलाफ अभियान तो चलाया जा सकता है, किन्तु जनमत को खरीदा नहीं जा सकता । उन्होंने कहा कि जनमत हमारे दल के समर्थन में है । ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार को जनता को यह आश्वासन दिलाना है कि यह अभियान हेमंत सोरेन को बदनाम करने के लिए नहीं चलाया जा रहा है, बल्कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को अपने अंजाम तक पहुंचाने की कोशिश है । वैसे अगर सार्वजनिक पद पर बैठा कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार करता है, तो उसकी जवाबदेही सुनिधित की जानी चाहिए। भ्रष्टाचार के कारण देश में लोकतंत्र कमजोर होता है ।

चुनाव हार जाना गुनाह नहीं है

सब यह कहते हुए अलग हुए कि कांग्रेस बरबाद हो रही है। लेकिन सोचें, अगर शरद पवार, ममता बनर्जी, जगन मोहन रेड्डी जैसे तमाम नेता कांग्रेस में ही रहते तो क्या कांग्रेस बरबादी के मौजूदा मुकाम तक पहुंची होती ? हो सकता है कि इसमें कांग्रेस नेतृत्व की गलतियां हों लेकिन छोड़ कर जाने वालों ने सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया। वहीं काम आजाद ने भी किया है। उन्होंने कोई समाधान नहीं सुझाया उलटे ...

अजीत द्विवेदी

यह कांग्रेस का दुर्भाग्य है कि आज हर आदमी उसकी कमियां बता रहा है, सुधार कोई नहीं सुझा रहा है। यह भी दुर्भाग्य है कि लोग या तो कांग्रेस के संपूर्ण विरोध में खड़े हैं या संपूर्ण समर्थन में। कांग्रेस की स्थिति पर तार्किक विचार का स्पेस खत्म हो गया है। गुलाम नबी आजाद ने भी कांग्रेस छोड़ी तो पांच पन्नों की चिट्ठी लिख कर कांग्रेस की कमियां बताईं। उन्होंने कोई समाधान नहीं बताया, जबकि वे पांच दशक तक कांग्रेस से जुड़े रहे हैं और कांग्रेस के दो सबसे करिश्माई नेताओं– इंदिरा और राजीव गांधी के साथ काम किया है। इससे पहले भी कांग्रेस के जो नेता पार्टी छोड़ कर गए, उन्होंने पार्टी नेतृत्व के प्रति सिर्फ अपनी भड़ास निकाली और यह बताया कि उन्होंने पार्टी के लिए कितना कुछ किया है। बिना किसी अपवाद के सबने यह कहा कि पार्टी लगातार चुनाव हार रही है। लेकिन चुनाव हार जाना कोई गुनाह है, जैसे चुनाव जीत जाना ही राजनीति की सार्थकता नहीं है। इसलिए किसी पार्टी का चुनाव हारना उसको छोडने का पर्याप्त कारण नहीं हो सकता है। हैरानी की बात है कि कांग्रेस के नेता पार्टी के चुनाव हारने की मिसाल देकर पार्टी छोड़ रहे हैं और मीडिया से लेकर सामान्य नागरिकों की चर्चाओं में भी इसको सही ठहराया जा रहा है। गुलाम नबी आजाद ने भी कहा कि पिछले आठ साल में कांग्रेस दो लोकसभा और 39 विध ानसभा चुनाव हारी है। पार्टी लगातार चुनाव हार रही है तो क्या वे पार्टी छोड़ देंगे? उन्होंने अपने आसपास भी देखना जरूरी नहीं समझा कि कितनी पार्टियां लगातार चुनाव हार रही हैं फिर भी उनके नेता पार्टी नहीं छोड़ रहे हैं। देश की कम्युनिस्ट पार्टियों ने सैकड़ों चुनाव हारे होंगे। 2004 के लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक प्रदर्शन करने के बाद लगातार उनकी सीटें घट रही हैं और एक एक करके पार्टी राज्यों की सत्ता से बाहर हो गई है। फिर भी कहीं यह सुनने को नहीं मिला कि उसके नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। इक्का–दुक्का अपवाद हों तो वह अलग बात है। भारतीय जनसंघ और भाजपा लगातार चुनाव हारते रहे हैं। भाजपा का गठन 1980 में हुआ था और अगले लोकसभा चुनाव में वह सिर्फ दो सीटें जीत पाई थी। इसके बावजूद उसके नेता पार्टी छोड़ कर नहीं भाग रहे थे। वे चुनाव जीतने का रास्ता तलाश रहे थे। अगर और मिसाल देखनी है तो ब्रिटेन की लेबर पार्टी को देख सकते हैं। लेबर पार्टी 2010 से विपक्ष में है। पिछल 12 साल से वह चुनाव हार रही है। उससे पहले 1997 से 2010 तक सरकार में रही थी लेकिन उससे पहले 1979 से 1997 तक पार्टी विपक्ष में रही। 1994 में टोनी ब्लेयर ने न्यू लेबर का नारा दिया और अपनी पार्टी के सिद्धांतों को समय के मुताबिक नया स्वरूप देकर जनता के बीच गए और लेबर पार्टी 1997 में सत्ता में आई। जब लेबर पार्टी 13 साल सत्ता में रही तब न कंजरवेटिव पार्टी के नेता चुनावी हार पर छाती पीट कर पार्टी छोड़ रहे थे और न अब जबकि लेबर पार्टी पिछले 12 साल से सत्ता से बाहर है तो उसके नेता छाती पीट कर पार्टी छोड़ रहे हैं। यह परिघटना सिर्फ श्दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रय की सबसे पुरानी पार्टी में ही देखने को मिलती है। पार्टी सत्ता से बाहर होती नहीं है कि नेता स्यापा करते हुए पार्टी छोडने लगते हैं। जाहिर है उनका पार्टी के सिद्धांतों, नीतियों या पार्टी के इतिहास से कोई लेना–देना नहीं होता है। उनका अपना हित सबसे ऊपर होता है और जब लगता है कि पार्टी या उसका मौजूदा नेतृत्व उनके हितों को पूरा करने में सक्षम नहीं है तो उन्हें पार्टी छोडने का फैसला करने में कोई समय नहीं लगता है।

गुलाम नबी आजाद भी उन्हीं नेताओं में से हैं, जिन्होंने निष्ठा और वैचारिक प्रतिबद्धता के ऊपर अपने निजी स्वार्थ को तरजीह दी। उन्होंने उस परिवार की तमाम कमियां बताईं, जिसकी परिक्रमा करके अपने जीवन की सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। लेकिन पांच पन्नों की अपनी चिट्ठी में कोई वैचारिक सवाल नहीं उठाया। उन्होंने कांग्रेस के ऊपर वैचारिक विचलन या सिद्धांतों से समझौता करने का आरोप नहीं लगाया है।

उन्होंने यह भी नहीं बताया कि कांग्रेस अभी जो राजनीति कर रही है उसमें क्या कमी है? क्या कांग्रेस ने समाजवादी आर्थिक नीतियों, समरसता के सिद्धांत और ध ार्मनिरपेक्षता के विचार का त्याग किया है? क्या कांग्रेस ने अपने पारंपरिक मूल्यों के साथ कोई समझौता किया है? क्या राहुल गांधी केंद्र की जनविरोधी नीतियों का विरोध ा नहीं कर रहे हैं? क्या कांग्रेस पार्टी सांप्रदायिक और विभाजनकारी नीतियों के खिलाफ खड़ी नहीं है? उन्हें बताना चाहिए था कि इन मामलों में या इन नीतियों को लेकर वे कहां खड़े हैं! कांग्रेस ने तो बिलकिस बानो से बलात्कार के दोषियों की रिहाई का विरोध किया लेकिन खुद गुलाम नबी आजाद ने क्या किया? हकीकत यह है कि आजाद की अपनी कोई वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं है। उन्होंने कांग्रेस के अंदर की ऐसी समस्याएं बताई हैं, जिन्हें भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में कोई समस्या नहीं माना जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टियों को छोड़ दें तो बाकी सभी पार्टियों के अंदर फैसला करने का वहीं सिस्टम है, जो कांग्रेस में है और राजनीति करने का तरीका भी वहीं है, जैसे कांग्रेस कर रही है। भाजपा में भी फैसले राष्ट्रीय कार्यकारिणी में या संसदीय बोर्ड में नहीं होते हैं। वहां भी फैसला अभी नरेंद्र मोदी और अमित शाह करते हैं और पहले अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी करते थे। भाजपा भी व्यक्तियों के चेहरे और उनके निजी करिश्मे पर ही चुनाव लड़ती है। भले आरएसएस के स्वंयसेवक जमीनी स्तर पर काम करते हों लेकिन 1980 में अटल बिहारी वाजपेयी के चेहरे को आगे करके राजनीति करने और चुनाव लडने की जो परंपरा शुरू हुई वह आज तक जारी है। इसलिए अगर व्यक्तिवाद कोई बुराई है तो वह सिर्फ कांग्रेस पार्टी की नहीं है, बल्कि सभी पार्टियों की है। सो, अच्छा होता कि गुलाम नबी आजाद पार्टी में रह कर नेहरू–गांधी परिवार के नेतृत्व को चुनौती देते। उनके एक साथी नेता मनीष तिवारी ने कहा है कि वे कांग्रेस में हिस्सेदार हैं, किराएदार नहीं हैं। अगर आजाद भी अपने को हिस्सेदार मानते, शरद पवार भी अपने को हिस्सेदार मानते, ममता बनर्जी भी अपने को हिस्सेदारी मानतीं तो ये सब लोग कांग्रेस छोडने की बजाय पार्टी के अंदर रह कर इसकी कमियों को दूर करने का प्रयास करते। नेहरू–गांध ी परिवार के वर्चस्व को चुनौती देते। लेकिन सब ने एक–एक करके अलग होने का रास्ता चुना। सब यह कहते हुए अलग हुए कि कांग्रेस बरबाद हो रही है।

लेकिन सोचें, अगर शरद पवार, ममता बनर्जी, जगन मोहन रेड्डी जैसे तमाम नेता कांग्रेस में ही रहते तो क्या कांग्रेस बरबादी के मौजूदा मुकाम तक पहुंची होती? हो सकता है कि इसमें कांग्रेस नेतृत्व की गलतियां हों लेकिन छोड़ कर जाने वालों ने सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया। वहीं काम आजाद ने भी किया है। उन्होंने कोई समाध ान नहीं सुझाया उलटे लोगों की नजर में कांग्रेस पार्टी को और बदनाम किया। उसके नेताओं पर कीचड़ उछाले। इससे कांग्रेस का तो जो नुकसान हुआ वह अपनी जगह है लेकिन आजाद का अपना चरित्र ज्यादा उजागर हुआ।

दस वर्षों से बंद पड़ी सेवता में बनी साधन सहकारी समिति

सेवता (सीतापुर)। सहकारिता विभाग व अधिकारियों के गैर जिम्मेदाराना रवैया व जनप्रतिनिधियों की अनदेखी और लापरवाही के चलते सीतापुर जिले की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत सेवता में बनी साधन सहकारी समिति वर्ष 2012 से बंद पड़ी है। खास बात यह है कि विगत दस वर्षों से बंद पड़ी सहकारी समिति को चालू कराने में किसी भी जनप्रतिनिधि ने जहमत नहीं उठाई। इस बात का खामियाजा क्षेत्र के किसानों को भुगतना पड़ रहा हैं।

समिति अभाव में किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ भी नहीं पहुंच पाता साधन सहकारी समिति सेवता में क्रय विक्रय के लिए समिति के पुराने भवन बने हुए हैं। जो कि दस वर्षो से बंद पड़े हैं। सेवता कस्बे के किसान सुरेश शुक्ला ने बताया कई साल से समिति बंद होने के कारण निजी उर्वरक विक्रेताओं के यहां से खाद बीज लेना पड़ता है जो कि महंगे दामों पर मिलता है। किसान मिश्रीलाल मौर्य ने बताया कि कई बार साधन सहकारी समिति को चालू कराने के लिए उच्च अधिकारियों के चक्कर लगा चुके हैं और उन्हें सिर्फ निराशा ही हाथ लगी। राम खेलावन यादव, सांवल यादव, कय्यूम खां आदि किसानों ने बताया सेवता समिति में दर्जनों ग्राम पंचायतों के सैकड़ों किसान खाद बीज लेने आते थे। समिति बंद होने से किसानों को काफी परेशानियां होती हैं। महंगे दामों पर निजी दुकानदारों से बीज लेना पड़ता है। सरकारी समिति साधन जो काफी जर्जर हो चुकी है। समिति भवन के अंदर व बाहर काफी गंदगी का अंबार लगा हुआ है। समिति भवन छुट्टा जानवरों का आश्रय स्थल बना हुआ है। भवन काफी जर्जर होने की वजह से गिरने की कगार पर है। किसानों ने जिम्मेदारों से सहकारी समिति साधन चालू कराने की मांग की है।

रोजगार सेवकों ने खंड विकास अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

साण्डा (सीतापुर)। विकासखंड सकरन में कार्यरत रोजगार सेवकों ने मुख्यमंत्री की घोषणाओं सहित दस सूत्रीय मांग पत्र के समाधान के संबंध में रोजगार सेवकों ने खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन देकर 4 अक्टूबर 2021 को मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणा पर शासन स्तर पर उचित निर्णय न लेने के संबंध में एडीओ आईएसबी जितेंद्र कुमार रस्तोगी को ज्ञापन देकर मुख्यमंत्री से संज्ञान लेकर समाधान करने की मांग की है। जबकि रोजगार सेवकों का कहना है इस संबंध में कि शासन को संगठन द्वारा पत्राचार और वार्ता के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर अवगत कराया गया। लेकिन अभी तक शासन द्वारा कोई संज्ञान नहीं लिया गया। रोजगार सेवकों का कहना है कि इस समय वर्तमान में हमारा मानदेय 7788 रुपए मिल रहा है। लेकिन मुख्यमंत्री के आदेश के बावजूद भी 10 महीने हो गए अभी तक शासन द्वारा 2218 रुपया खाते में जमा नहीं किया गया। जिससे किसी भी मनरेगा कर्मी की मृत्यु के उपरांत उसके परिवार के आश्रित को लाभ नहीं मिलेगा। मांग पत्र में रोजगार सेवकों ने कहां की मनरेगा कर्मी की मृत्यु के उपरांत परिवार के आश्रित को समायोजन किया जाये। जिसके अंतर्गत चार विभागों के कार्य जोडने थे परंतु सिर्फ प्रधानमंत्री आवास व मुख्यमंत्री आवास की जियो टैगिंग के कार्य ही जोड़े गए हैं। जबकि रोजगार सेवकों का कहना है कि अन्य कार्य भी जॉब चार्ट में जोड़े जाएं व बकाया मानदेय भी दिया जाए व रोजगार सेवकों को राज्य कर्मचारी का दर्जा भी दिया जाए। अभी सब मांगों को लेकर रोजगार सेवकों ने खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं का समाधान करने की मांग की।

आवेदन 5 सितम्बर तक

सीतापुर। उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीतापुर में जिले में आपराधिक मामलों में वंचितों एवं कमजोर वर्ग की प्रतिरक्षा हेतु लीगल एड डिफेन्स काउंसलिंग सिस्टम स्थापित किया जा रहा है। जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव सुदेश कुमारी ने बताया कि इसके लिए एक चीफ लीगल डिफेन्स, एक डिप्टी चीफ डिफेन्स तथा दो असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल का चयन किया जायेगा। जिसके लिए आवेदन 5 सितम्बर तक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय में दिये जा सकते है। जनपद न्यायालय एवं उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की वेबसाइट से प्रारूप लिया जा सकता है।

गूगल मीट में प्रतिभाग न किये जाने लेकर 35 पंचायत सहायकों का वेतन रूका

सिधौली (सीतापुर)। गेटवे इन्स्टॉल को लेकर पंचायत सहायक को गुगल मीट में प्रतिभाग न किए जाने को लेकर सहायक विकास अधिकारी ने 35 पंचायत सहायको को एक दिन का वेतन रोकते हुऐ नोटिस भेजकर स्पष्टीकरण मांगने की कार्रवाई की गई है। गेटवे इन्स्टॉल करने को लेकर पंचायत सहायक को गूगल मीट में जुडने के लिए निर्देश दिए गए थे। परंतु पंचायत सहायक टिकौली, बाड़ी, अलादापुर, जजौर, मुरहाडी, कन्टाइन सहित 35 पंचायत सहायक गूगल मीट समीक्षा में प्रतिभाग नहीं किया गया। जो अत्यंत खेद का विषय है। जबकि गेटवे शासन की अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जिसके बिना इंस्टॉल किए ग्राम पंचायत में कराए गए विकास कार्यों का भुगतान नहीं होगा। जिससे प्रतीत होता है कि उच्च अधिकारियों द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा है। आप द्वारा अपने कर्तव्यो के प्रति घोर लापरवाही बरती जा रही है। जिससे शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न हो रही है। इसलिए आप का उक्त दिवस का मानदेय बाधित करते हुए आप को निर्देशित किया जाता है कि पत्र प्राप्ति के तीन दिवस में अपना स्पष्टीकरण मय साच्छ सहित अधोहस्ताक्षरी के समक्ष प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें। स्पष्टीकरण संतोषजनक ना होने की दशा में आप के विरुद्ध कार्यवाही हेतु उच्च अधिकारियों को भेजा जाएगा। सहायक विकास अधिकारी मनोज कुमार सिंह गेटवे इन्स्टॉल को लेकर सभी पंचायत सहायकों को गूगल मीट में जुडने को कहा गया था। परन्तु 35 पंचायत सहायकों ने लापरवाही बरती। जिसको लेकर एक दिन का वेतन रोकते हुऐ नोटिस भेजकर तीन दिन में स्पष्टीकरण मांगा गया है।

शहर में जलते ट्रांसफार्मर, अधिकारी मौन

विभाग पर ठेकेदार, अधिकारियों की मिलीभगत के आरोप

सीतापुर। अप्रैल माह से जब से गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरू किये थे और ओलोग गर्मी से बचने के लिए अपने घरों एवं प्रतिष्ठानों में विद्युत उपकरणों पंखें, कूलर और एसी के सहारे से गर्मी से बचने की कोशिश कर रहे थे। तब से शहर में चारों ओर लगातार ट्रांसफ ार्मर जलने लगे और ये सिलसिला अब तक लगातार चल रहा है। शहर के कुछ क्षेत्रों में तो पिछले 45 दिनों से पांच बार ट्रांसफार्मर जल चुके हैं। इस सम्बन्ध में काफी हो हल्ला मचा। राजनैतिक पहुँच वाले लोगों से लेकर आम जनता ने काई बार शहर के अलग अलग हिस्सों में प्रदर्शन किया गया। किन्तु बिजली विभाग के अफसरो, इंजीनियरों के कानों पर जू तक नहीं रेंगी। विभाग से सम्पर्क करने पर हमेशा रटा रटाया जवाब दिया जाता है कि लोड अधिक होने से ट्रांसफार्मर जल रहे हैं। सम्बंधित जेई और एसडीओ से पूछने पर दोनों अपने आप को मजबूर बताते हुए अपने हाथ खड़े कर देते हैं। कहते हैं मेरे हाथ में कुछ नहीं है उच्चाधिकारियों से संपर्क करिये। तो आखिर इसका जिम्मेदार कौन है कि लोड ज्यादा है तो क्षमता बढ़ाने की जिम्मेदारी किसकी होगी। सरकार द्वारा लगातार विद्युत कनेक्शन देने की प्रक्रिया जारी है। जिससे सरकार को राजस्व तो प्राप्त हो रहा है परन्तु आम जनता को सुविधा नहीं मिल पा रही है। एक विभागीय ने नाम गोपनीय रखने की शर्त पर बताया कि उच्चाधिकारियों से ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाने के लिए जब हम लोग कहते हैं तो कहा जाता है ट्रांसफार्मर जलते हैं तो जलने दो आप बदलते रहो। अब सवाल पैदा होता है कि क्षमता न बढ़ाने के बजाये जलने दो.बदलते रहो की नीति से किसको फायदा हो रहा है।

न्यायालय की गरिमा के विरुद्घ न्यायालय के अन्दर छलका जाम

मिश्रिख (सीतापुर)। तहसील मिश्रित में स्थित उपजिलाधिकारी कार्यालय में तैनात पेशकार सुरेश कुमार मौर्य द्वारा न्यायालय की गरिमा के विरुद्ध न्यायालय के अंदर जाम से जाम छलकाकर 1 सितंबर को अपना जन्म दिन मनाया गया। मामले को लेकर तहसील मिश्रित में स्थित बार ऐशोसिएशन अधिवक्ता संघ के अधिवक्ताओ ने इस बात का कड़ा विरोध करते हुए उपजिलाधिकारी गौरव रंजन श्रीवास्तव को एक शिकायती पत्र दिया है। आरोप है कि 1 सितंबर को उपजिलाधिकारी व तहसीलदार जनपद की मीटिंग में गए हुए थे। उसी दिन उपजिलाधिकारी कार्यालय में तैनात पेशकार सुरेश कुमार मौर्य द्वारा न्यायालय के अंदर अपने जन्मदिन की पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें तहसील के समस्त कर्मचारी, चपरासी और काफी संख्या में प्राइवेट कर्मी शामिल हुए। न्यायालय की गरिमा के विरुद्ध उन्होंने न्यायालय के अंदर जन्म दिन पार्टी मनाई और खुलेआम जाम से जाम छलकाया गया। तहसील में पहली बार किसी पेशकार द्वारा न्यायालय के अंदर ऐसा कृत्य किया गया है। जो न्यायालय की गरिमा के कतई विरुद्ध है। अधिवक्ता संघ इस बात का जोरदार बिरोध करता है। अधिवक्ता संघ ने उपजिलाधिकारी को मामले शिकायती पत्र देकर न्यायालय में तैनात पेशकार सुरेश कुमार मौर्य के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करने की मांग की है।

वारंटी अपराधियों के विरुद्घ चलाया गया अभियान

मिश्रिख (सीतापुर)। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर वांछित वारंटी अपराधियों के बिरुद्घ चलाए जा रहे अभियान के तहत सीओ सुशील कुमार यादव के निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक राकेश सिंह के कुशल नेत्रत्व में कोतवाली पुलिस टीम व्दारा थाना संदना के ग्राम सहोली निवासी जावेद पुत्र लालमोहम्मद, ग्राम जोगियाहार मजरा जरिगवां निवासी विनोद कुमार शुक्ला पुत्र ओमप्रकाश, ग्राम पतौंजा निवासी पवन शुक्ला पुत्र रमेश शुक्ला, कोमल उर्फ दीपाशंकर पुत्र विदेह मिश्रा को गिरिफ्तार कर आवस्यक कार्यवाही की गई है।

महिला का रक्त रंजित शव मिलने से हड़कंप

मानपुर (सीतापुर)। थाना इलाके में घर के अंदर संदिग्ध हालत में विवाहिता का रक्त रंजित शव मिलने से सनसनी फैल गई। महिला के गले पर धारदार हथियार का निशान हैं। परिजनों का कहना है महिला मनो रोगी थी। उसने आत्महत्या कर ली है। वहीं ग्रामीण दबी जुबान में हत्या की आशंका जता रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस के आलाधिकारी मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंच कर जांच के लिए नमूने एकत्र किये। पुलिस का कहना है परिजनों ने आत्महत्या की तहरीर दी है। पुलिस हत्या व आत्महत्या दोनों पहलुओं पर जांच कर रही है।

प्रतापपुर मजरा मारूछी निवासी कैशरजहाँ 40 पत्नी इसहाक अली का शव ....सुबह 6 बजे के करीब कमरे में पड़ा मिला। मृतका के गले पर धारदार हथियार का निशान था। जिससे कमरे में काफी खून फैल गया था। इसहाक अली का कहना है कि जब वह सुबह घर से मदरसा में पढ़ाने के लिए निकला था। तब वह ठीक–ठाक हालत में थी। इसहाक सिधौली इलाके के भंडिया में स्थित रमदाना मदरसा में पढ़ाता है। उसका कहना है जब वह रास्ते में था मोबाइल पर घर से फोन आया कि कैशरजहां का रक्तरंजित शव कमरे में पड़ा है। इसहाक का यह भी कहना है कि कैशरजहाँ मानसिक रोगी थी। जिसका इलाज चल रहा था। जुमे की नवाज पढने के बाद उसको लखनऊ इलाज के लिए ले जाने का आज प्रोग्राम था। थाना प्रभारी अरविंद कुमार कटियार ने बताया परिजनों ने आत्महत्या की तहरीर दी है। एएसपी डॉ राजीव दीक्षित, सीओ लहरपुर सुजीत कुमार दुबे ने मौके पर पहुच कर जांच पड़ताल की। जनपद से आई फोरेंसिक टीम ने मौके से जांच के लिए नमूने लिए।

शौंच गयी युवती पर चार नकाबपोश बदमाशों ने हमलाकर किया घायल

नैमिषारण्य (सीतापुर)। संदना इलाके में शौंच गयी युवती पर चार नकाबपोश बदमाशों ने हमलाकर उसे घायल कर दिया। घायल युवती को उपचार हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार ग्राम भगवतीपुर निवासी रूबी 19 वर्ष पुत्री भगवती सुबह गांव के बाहर शौंच के लिए गयी थी। जहां उसे नकाबपोश बदमाशों ने दबोच लिया। बचाव करने के लिए जब युवती ने भागने का प्रयास किया तो हमलावरों ने उसका गला धारदार हथियार से रेत दिया। घायलावस्था में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बच्चा चोरी की अफवाह फैलाने वालों पर होगी कार्रवाई– पुलिस अधीक्षक

हरदोई ।बच्चा चोरी की अफवाह फैलाने वालों पर कड़ी नजर रखी जाएगी, और ऐसे तत्वों की सूचना पर उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने लोगों से आम जनमानस से अपील की है कि अफवाहों से दूर रहें,जिससे कि समाज में भ्रांतियां ना फैले ,पुलिस हर क्षेत्र में निगाह लगाए है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि बच्चा चोरीध्संदिग्ध व्यक्तियों के देखे जाने की अफवाह को फैलाने वालों पर कार्यवाही होगी। पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने बताया कि विगत कई दिनों से बच्चा चोरीध संदिग्ध व्यक्तियों के देखें जाने की अफवाह फैल रही है।कृपया ऐसी अफवाहों पर ध्यान न दें, यदि ऐसी कोई सूचना प्राप्त होती है तो तत्काल अपने निकटतम थाना क्षेत्रध्चौकी व डायल 112 पर सूचना दें,इस प्रकार की अफवाहों की उच्चाधिकारियों द्वारा लगातार समीक्षा की जा रही है व जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारीध्थाना प्रभारी को ग्रामीण क्षेत्रों, स्कूलों में जाकर अफवाहों के प्रति आमजनमानस को जागरूक किया जा रहा है।

उच्च न्यायालय के आदेश की अनदेखी लोकतंत्र के लिए बड़ा खतराःकृष्ण कुमार सिंह

हरदोई प्रशासन पूरी तरह अवैध मारुति शोरुम के आगे नतमस्तकः के के सिंह

हरदोई । शहर के मारुति शोरूम पर हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद उसे ना गिराने को लेकर लोगों में प्रतिक्रियाएं बढ़ती ही जा रही हैं जहां योगी शासन को जीरो टॉलरेंस की नीति पर चलने को कहा जाता है वही राजनीतिक हस्तक्षेप और ब्यूरोक्रेसी की तानाशाही रवैया भाजपा की जड़ें खोदने के लिए स्थितियां अनुकूल बनती जा रही हैं यहां तक कि बेलगाम भ्रष्टाचारी अधिकारियों पर राजनैतिक प्रतिनिधि कोई कार्यवाही तक नहीं करा पा रहे हैं उस पर हरदोई की जनता काफी अरसे से बुलडोजर की कार्यवाही देखने के लिए उत्सुक है इसी बात के मद्देनजर ज्ञान योग परमार्थ ट्रस्ट की जमीन पर बने अवैध मारुति शोरूम का मुकदमा लड़ने वाले एडवोकेट कृष्ण कुमार सिंह और एडवोकेट अंशु सिंह ने प्रशासन के रवैए पर तल्ख टिप्पणी की है।

हरदोई के नानकगंज ग्रांट में बने अवैध मारुति शोरुम के प्रकरण से समझा जा सकता है कि भाजपा का बुलडोजर उन लोगो पर नही चलता है जो लोग भाजपा का दामन थाम लेते हैं। अवैध शोरुम के मालिक हमेशा सत्ता में सिर्फ इस कारण रहे कि सार्वजनिक खाते की भूमि पर बने अवैध मारुति शोरुम पर कार्यवाही न हो जाये।

आप को जान कर हैरानी होगी कि उच्च न्यायालय ने पीआईएल सँख्या 7472ध्2021 में दिनांक 5 जुलाई 2022 को आदेश किया था कि 15 दिनों के भीतर कार्यवाही करना सुनिश्चित करें लेकिन वर्तमान समय में कोई भी स्थगन आदेश न होने पर भी यह अग्रवाल बन्धु का शोरुम कार्यवाही की जद से बाहर है।

उच्च न्यायालय के अधिवक्ता कृष्ण कुमार सिंह का कहना है कि हरदोई प्रशासन बेहद ही दबाव में है क्योंकि शोरुम को कानूनी कार्यवाही से बचाने वाले राजनीतिक हाथ बड़े हैं। के0के0 सिंह ने कहा कि अवैध शोरुम को बचाने वाले हाथ चाहे जितने बड़े हो लेकिन ज्यादा दिन तक भ्रष्टाचार के साम्राज्य को कानूनी कार्यवाही से बचा नही सकते हैं।बहुत सी प्रक्रियाएं नियम विरुद्ध चल रही हैं जो उचित नही है। अधिवक्ता के0के0सिंह ने कहा कि उच्च न्यायालय के आदेश का पालन न होना बेहद ही चिंता का विषय है जब आम जनमानस को न्याय नही मिलता है तब वह न्याय पालिका की शरण में जाता है और जब न्याय पालिका न्याय करती है तब उसका अनुपालन प्रशासन नही करता है जैसा मारुति शोरुम के प्रकरण में हो रहा है।कोर्ट के आदेशों का अनुपालन न होने से कही न कही भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वालों के हौसलों में गिरावट व भ्रष्टाचार करने वालो के हौसलों में बढ़ोतरी हो रही है जो हमारे लोकतंत्र के लिए बड़ा खतरा है।

संयुक्त ग्राम विकास आयुक्त में गौ–आश्रय स्थल का किया औचक निरीक्षण

हरदोई ।संयुक्त ग्राम विकास आयुक्त नंद लाल सिंह ने ग्राम सभा महरी के अस्थायी गौ–आश्रय स्थल का औचक निरीक्षण किया। संबंधित अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए। गौ संरक्षण एवं संवर्धन सरकार की प्राथमिकता है। विकासखंड कछौना की ग्राम सभा महरी में अस्थाई गौ–आश्रय स्थल में वर्तमान समय में 149 गौवंश हैं। चारा की समुचित व्यवस्था करें। लंपी बीमारी के मध्य में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। डॉक्टरों की टीम नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण करें। गौवंशों को साफ पानी पिलाएं। ग्राम प्रधान ने बताया क्षमता से अधिक गौवंशों के कारण देखभाल में असुविधा होती है। अस्थायी गौ–आश्रय स्थल खुल जाने के बावजूद ग्राम सभा महरी में आज भी छुट्टा पशुओं की समस्या बनी है। सैकड़ों की संख्या में छुट्टा गौवंश गांवध्खेतो में वितरण करते हैं। जिससे किसान रातभर रतजगा करने को विवश हैं। इसके बाद ब्लॉक मुख्यालय का निरीक्षण किया। प्रांगण में गंदगी व जगह–जगह कूड़े के ढेर देख कर जिम्मेदार अधिकारियों को फटकार लगाई। इस अवसर पर परियोजना निदेशक, खण्ड विकास अधिकारी प्रमोद अग्रवाल, एडीओ संतोष कुमार, ग्राम प्रधान आशीष कुमार मौजूद रहे।

भक्तिमय भजनों ने गजानन समिति में बांधा समा

हरदोई ।गजानन सेवा समिति वंशी नगर में चल रहे आयोजनों की श्रंखला में आज सुबह नित्य प्रति आरती साढ़े आठ पर हुई। शाम को दिल्ली से आई प्रख्यात भजन गायिका आख्या सिंह ने अपने भजनों से लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसके पूर्व साईं म्यूजिकल ग्रुप के डायरेक्टर एवं गायक सुनील त्रिवेदी ने भजनों से समा बांध दिया, मौजूद दर्शक झूमने को मजबूर हुए। पंडाल में मौजूद दर्शक देर शाम तक जमे रहे। शाम की नित्य आरती में आज पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मुकेश अग्रवाल ब्लॉक प्रमुख पन्ने सिंह, ओम प्रकाश गुप्ता, कपिल गुप्ता, छोटू अग्रवाल, के सी गुप्ता, रीना गुप्ता शामिल रहे।

समिति के अध्यक्ष मनीष चतुर्वेदी ने बताया कि कल शाम को सुंदरकांड समिति अशरफ टोला द्वारा संगीतमय सुंदरकांड प्रस्तुत किया जाएगा सुंदरकांड से ठीक पहले चार बजे फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया है जिसमें नन्हे मुन्ने बच्चे विभिन्न वेशभूषा में मनमोहक रूप से स्टेज पर उतरेंगे।

संयोजक अविनाश मिश्रा संजीव रस्तोगी, अनुज महिंद्रा, प्रवीण अवस्थी, प्रभाकर पाठक, दीपक त्रिवेदी, अनुपम पांडे ,ओम प्रकाश मिश्रा ष्राजूष, राजमोहन पांडे, सुमित अग्रवाल ,पंकज चतुर्वेदी जेके सेठ ,अनिल तिवारी मुरारीलाल पाठक, नीरज शुक्ला ,निखिल कांत श्रीवास्तव, सोनू मिश्रा, राजेश गुप्ता राजे ,मोहित कपूर, विपिन चंद्र, पिंकू, पवन दीक्षित, अंशु द्विवेदी, शैलेंद्र अवस्थी, आनंद अवस्थी, सागर गुप्ता, गौरव मिश्रा, दीपक कपूर, सॉरी चतुर्वेदी, प्रखर रस्तोगी, आलोकिता श्रीवास्तव, कपीश चतुर्वेदी, विनायक शुक्ला,केके अवस्थी, अशोक सिंह लालू, नवल किशोर द्विवेदी,राजेश श्रीवास्तव राजू सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

भाजपा युवा मोर्चा जिला मंत्री ने ग्राम विकास अधिकारी पर रुपए मांगने का लगाया आरोप

हरदोई । भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के जिला मंत्री ने हरपालपुर विकास खंड की ग्राम पंचायत भुहसेहा के ग्राम विकास अधिकारी पर कोविड–19 मौत हो जाने के चलते मृतक की रिपोर्ट लगाने पर रुपए मांगने का आरोप लगाया है। भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के जिला मंत्री जितेंद्र राजपूत ने जिला पंचायत राज अधिकारी मुख्य विकास अधिकारी जिला अधिकारी को भेजे गए पत्र में बताया कि हरपालपुर विकास खंड की ग्राम पंचायत भुसेहरा के ग्राम पंचायत अधिकारी किसी भी रिपोर्ट लगाने के लिए पैसे की मांग करते हैं।भुसेहरा गांव निवासी सचिन से अपनी माता माया देवी के फार्म पर कोविड–19 में पिता उमेश की मौत की रिपोर्ट लगाने के लिए ग्राम विकास अधिकारी ने 5 हजार रूपये की मांग की। शिकायती पत्र में आरोप लगाया गया है जबकि शासन के मनसानुरूप ग्राम पंचायत में ग्राम विकास अधिकारी को रहना चाहिए ना तो वह ब्लॉक पर रहते हैं ना ही कभी ग्राम पंचायत में जाते हैं।

टीवीटी योजना के जरिए किसानों की आय बढ़ाने में जुटी सरकार

हरदोई।जिला उद्यान अधिकारी सुरेश कुमार ने अवगत कराया विभाग द्वारा किसानों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत टीवीटी के माध्यम से नवीन उद्यान रोपड़ हेतु आम, अमरूद, कट फ्लावर, बल्वस फ्लॉवर, लूज फ्लावर , उच्च गुणवत्ता युक्त सब्जी उत्पादन तथा मसाला क्षेत्र में विस्तार के लिए पंजीकृत कृषकों को अनुदान के साथ उपलब्ध कराया जाएगा, उन्होंने कहा कि उक्त योजना का लाभ पाने हेतु पंजीकृत कृषक विभाग की वेबसाइट पर पंजीकरण कराएं, और कृषकों का चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए किसान उद्यान विभाग कंपनी बाग में संपर्क करें। पंजीकरण उद्यान विभाग की वेबसाइट पर कराया जा सकता।

लो वोल्टेज की समस्या को लेकर ग्रामीणों ने किया पावर हाउस का घेराव

हरदोई । कटियारी क्षेत्र में इन दिनों अघोषित कटौती एवं लो वोल्टेज की समस्या से ग्रामीण परेशान हैं।उपभोक्ताओं ने पलिया विद्युत उपकेंद्र पर पहुंचकर घेराव किया है। कटियारी क्षेत्र के पलिया विद्युत उपकेंद्र के में 33केवी लाइन फाल्ट होने का हवाला देकर लगातार अघोषित बिजली कटौती की जा रही है।वहीं लो वोल्टेज की समस्या से ग्रामीण त्रस्त हैं। बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर पावर हाउस का घेराव किया है। विद्युत उपखंड सांडी के एसडीओ को दिये गये ज्ञापन में बताया कि प्रदेश की सरकार गाँवो मे 20 घंटे बिजली देने का दावा कर रही छै। लेकिन क्षेत्र में 2 घंटे आपूर्ति मिल पा रही है। जिसमें अत्यंत लो वोल्टेज होने के कारण बिजली से चलने वाले उपकरणों का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। यहा तक कि मोबाइल चार्ज करने की भी दिक्कतें आ रही हैं। हरपालपुर कस्बे में काफी समय से न तो कोई पोल लगाया गया और न ही तार डाले गए। जिससे हम सभी लोग लकड़ी के बल्ली लगाकर उसके सहारे तार बांधने को मजबूर हैं।किसी भी समय कोई बड़ी दुर्घटना संभावित है। आए दिन गांव के तार टूटकर सड़क पर गिर जाते हैं। इस मौके पर डॉ राहुल वर्मा, केके त्रिवेदी, अखिलेश शुक्ला मोहित कश्यप, सूरज शर्मा, राजा आदि मौजूद रहे।

खतरे के निशान से 40 सेमी ऊपर बह रही सरयू

बरहज/भागलपुर। सरयू नदी में सैलाब उमड़ आया है। नदी पिछले दो दिनों से निरंतर बढ़त बना रही है। सरयू नदी खतरे के निशान 66.50 से 40 सेमी ऊपर 66.90 मीटर पर बह रही थी। तीसरी बार सरयू के उफनाने से तटवर्ती गांवों के लोगों को बाढ़ की आशंका सताने लगी है। वहीं, भागलपुर में भी पिछले 24 घंटे से एक सेमी प्रति घंटे की रफ्तार से जलस्तर में इजाफा दर्ज किया जा रहा है। सरयू में उमड़ रहे सैलाब से जलस्तर तेजी से बढ़त बना रही है। बाढ़ खंड विभाग की ओर से थाना घाट पर बनाए गए मीटर गेज पर बाढ़ का पानी 66.90 मीटर पर पहुंच गया है। इससे पक्के घाटों की सीढ़ियां डूब गई हैं। सरयू के उफनाने से राप्ती नदी भी बढ़त पर है। भदिला प्रथम चारों ओर से बाढ़ के पानी से घिर गया है। जबकि परसियां–विशुनपुर देवार में नदी खेतों के रास्ते गांवों की ओर रुख कर रही है। कटइलवा के जवाहिर यादव, कपरवार के देवेश सिंह, ज्ञानेश्वर सिंह, अखिलेश सिंह आदि का कहना है कि नदी के जलस्तर में निरंतर हो रही उठापटक से लोगों की सांसें अटक जा रही हैं। नदी के बढ़त बनाने के कारण बाढ़ चौकियों को अलर्ट कर दिया गया है। भागलपुर में बने मीटर गेज पर नदी खतरे के निशान 64.30 से आठ सेंटीमीटर नीचे बह रही है। बाढ़ का पानी रिहायशी इलाकों की ओर बढ़ रहा है। प्रशासन की ओर से बीजीएम इंटर कॉलेज भागलपुर, जूनियर हाईस्कूल मईल, तेलियां कला, प्राथमिक विद्यालय मौना गढ़वा को राहत चौकी बनाई गई है। सहायक अभियंता अशोक द्विवेदी ने बताया कि जलस्तर में बढ़त दर्ज की जा रही है। हालात सामान्य हैं।

कोटेदारों दिया धरना, सौंपा ज्ञापन

देवरिया। फेयर प्राइस शॉप डीलर एसोसिएशन के बैनर तले कोटेदारों ने संगठन जिलाध्यक्ष के साथ दुर्व्यवहार, दबाव में राशन की दुकानों को सस्पेंड व निरस्त करने के विरोध में कलेक्ट्रेट स्थित जिला पूर्ति अधिकारी कार्यालय में धरना दिया और नारेबाजी की। उन्होंने जिलाधिकारी को संबोधित मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा। कोटेदारों ने कहा कि बैतालपुर के हाट निरीक्षक ने संगठन के जिलाध्यक्ष के साथ दुर्व्यवहार किया। उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। कहा कि राजनीतिक दबाव में जिले की निरस्त दो दर्जन दुकानों की फिर से जांच कराई जाए। सस्पेंड दुकानों को बहाल किया जाए। उच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 2001 से 2015 तक का डोर–टू–डोर डिलीवरी कमीशन और भाड़ा बिल पर हस्ताक्षर करने के लिए पूर्ति निरीक्षक को निर्देश दिए जाएं। बॉयोमेट्रिक वितरण करने के बाद समस्त अनाज बॉयोमेट्रिक मशीन में उपलब्ध है। सभी लोग अंगूठा लगाकर अनाज ले रहे हैं। ऐसी स्थिति में वितरण प्रमाणपत्र पर रोक लगाई जाए। मई और जून माह के कमीशन का भुगतान शीघ्र कराया जाए। इस दौरान जिलाध्यक्ष विश्वजीत मणि, बांके बिहारी पांडेय, शिवमूर्ति सिंह, सुदर्शन कुमार गुड्डू, केशव सिंह, नंदलाल, सत्येंद्र कुमार आदि मौजूद रहे।

प्रतिज्ञा व शिविर के नियम सिखाए

महराजगंज। क्षेत्र के बेलवा काजी साधु शरण भारद्वाज इंटर कॉलेज में तीन दिवसीय स्काउट शिविर शुभारंभ रोटरी क्लब के संस्थापक अध्यक्ष विंध्यवासिनी सिंह ने किया। पहले दिन जिला स्काउट गाइड संगठन हेड क्वार्टर कमिश्नर हरीश चंद्र श्रीवास्तव ने स्काउट प्रार्थना, ध्वज व गीत, स्काउट की प्रतिज्ञा व कैंप के नियम सिखाए। रोटरी क्लब के संस्थापक अध्यक्ष विंध्यवासिनी सिंह ने बच्चों को देशभक्ति की भावना, भाईचारा, प्रेम के बारे में समझाया। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्काउट गाइड जैसे संगठन से जुड़कर अपने विद्यार्थी जीवन में ही समाज के प्रति सेवा भाव जागृत होता है। एएलटी प्रशिक्षक उमेश गुप्ता ने बालक, बालिकाओं को ध्वज व गीत, स्काउट की प्रतिज्ञा व शिविर के नियम सिखाया। प्रधानाचार्य सुरेंद्र प्रसाद पांडेय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस दौरान प्रबंधक विमल कुमार पांडेय, सुनील कुमार मिश्र, जिला स्काउट कमिश्नर सत्यनारायण खरवार, दीनानाथ विश्वकर्मा, जोखू यादव, सुरेंद्र चौधरी, हरि नंद यादव, राजकुमार, दिलीप चौबे, प्रदीप चौबे आदि मौजूद रहे।

देर से आई बस तो चढ़ने के लिए करनी पड़ी धक्का–मुक्की

महराजगंज। स्थानीय रोडवेज बस स्टेशन पर यात्री सुविधा बेहतर नहीं है। यहां समय से बस नहीं मिलने के कारण यात्रियों को परेशानी होती है। स्टेशन पर गोरखपुर जाने के लिए बस देर से आई तो इसमें चढ़ने के लिए यात्रियों को धक्का–मुक्की करनी पड़ी। दोपहर में निचलौल, ठूठीबारी जाने के लिए यात्रियों को बस का देर तक इंतजार करना पड़ा। जय प्रकाश नगर के रहने वाले मोहन विश्वकर्मा को निचलौल जाना था। उन्होंने बताया कि करीब एक घंटे से बस का इंतजार कर रहा हूं। लेकिन, बस नहीं नहीं मिली। राजेंद्र ने बताया कि गोरखपुर जाने के लिए एक घंटे बस का इंतजार करने के बाद बस आई तो चढ़ने में काफी दिक्कत हुई। महराजगंज डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक एनके चौधरी ने बताया कि स्टेशन से समय सारणी के अनुसार बस भेजी जा रही है। यात्री सुविधा का पूरा ख्याल रखा जा रहा है।

महिला की मौत के बाद अस्पताल सील

परतावल(महराजगंज)। ऑपरेशन के बाद महिला की मौत के मामले में निजी अस्पताल को सील कर दिया गया है। एसीएमओ डॉ. राजेंद्र प्रसाद टीम के साथ सियरहीभार अस्पताल पर पहुंचे। जांच के बाद संचालक पर केस दर्ज कराने के लिए अधीक्षक को निर्देशित किया। वहीं, पुलिस ने अस्पताल संचालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। श्यामदेउरवा थाना क्षेत्र के हरपुर तिवारी में बृहस्पतिवार को कथित डॉक्टर ने अपने निजी अस्पताल में पुरैना की रहने वाली कुसुम का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद महिला की हालत बिगड़ गई तो गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराने की बात कह कर उन्हें अपनी गाड़ी से ले जाने लगा। महिला को गांव के बाहर ही छोड़कर कथित डॉक्टर फरार हो गया। इसके बाद महिला के परिवार के लोगों ने हरपुर तिवारी के सियरहीभार रोड पर स्थित हॉस्पिटल पर जाकर जमकर हंगामा किया। परतावल सीएचसी अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने बताया कि अस्पताल को सील कर दिया गया है। इस संबंध में श्यामदेउरवा थानाध्यक्ष आनंद गुप्ता ने बताया कि अस्पताल संचालक अभिनव यादव निवासी सिरसियां के खिलाफ धोखाधड़ी व अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया गया है।

फसल की सुरक्षा में किसानों का जीवन असुरक्षित

महराजगंज। एक एकड़ खेत में सब्जी की फसल लगी है। इसकी सुरक्षा में जीवन ही असुरक्षित लग रहा है, लेकिन रोजी रोटी का सवाल है, क्या किया जाए? रात को में खेत की तरफ आने से डर लगता है। बीते दिनों आबादी की तरफ तेंदुआ आ गया था, इससे अब डर लग रहा है। कई बार खेत के किनारे तेंदुआ दिखा, लेकिन आबादी की तरफ नहीं आया। फसल की सुरक्षा करने में हर पल खतरे की आशंका रहती है।

यह कहते हुए रामनगर गांव के पोखरहवा टोले के रहने वाले संदीप कुमार मौर्य खेत की रखवाली में होने वाली समस्याओं का जिक्र करने लगे। वह खेत में बनी झोपड़ी में बैठकर सब्जी की फसल की निगरानी कर रहे थे। बताया कि खेतीबाड़ी कठिन समस्या है। इस बार मौसम ने भी साथ नहीं दिया। किसी तरह सब्जी की फसल तैयार हुई तो जंगली जानवर बर्बाद कर दे रहे हैं। इनसे फसल को सुरक्षित रखने में स्वयं जान जोखिम में डालना पड़ रहा है। एक एकड़ भूमि में बोड़ा, करैला, नेनुआ की खेती हुई है। वह छह भाइयों में सबसे छोटे हैं।

इसी तरह से राजेंद्र कई लोगों के साथ जंगल के किनारे लाठी–डंडे लेकर सब्जी की खेती की रखवाली करते मिले। उन्होंने कहा कि वह 50 डिस्मिल खेत में करैला, कुनुरु, बोड़ा की खेती की है। तीन लड़के हरिदीन, श्यामदीन तथा रामदीन हैं। राजेंद्र ने बताया कि उनके खेत के पास बांस के करीब एक सप्ताह से तेंदुआ लगातार आ रहा है। रात में खेत की तरफ जाना बंद कर दिया। राधेश्याम मौर्य ने बताया कि वह एक एकड़ भूमि में करैला, मूली, बोड़ा, गोभी की खेती हुई है। जंगल से सटे होने से हमेशा तेंदुआ के आने का भय बना रहता है। झोपड़ी में लाठी–डंडा लेकर बैठे रामरेखा फसल की रखवाली करते दिखे। रामरेखा ने बताया कि एक एकड़ खेत में नेनुआ, करैला, बोड़ा की खेती की है। चार दिन पहले रात में लगभग दो बजे तेंदुआ आबादी की तरफ आ रहा था, कुत्तों के भौंकने से जंगल की तरफ चला गया। बुद्धिराम ने बताया कि 25 डिस्मिल भूमि में करैला नेनुआ की खेती की है। चंद्रज्योति ने बताया कि 50 डिस्मिल भूमि में बोड़ा की खेती है। तेंदुए के भय से खेत की तरफ कोई नहीं जाता है। रामजीत, जगरनाथ, जयराम, वीरेंद्र, केशव, शिवनाथ आदि किसानों ने बताया कि तेंदुए के भय से रात में खेत की रखवाली नहीं हो पा रही है। जंगली पशु फसल बर्बाद कर दे रहे हैं।

यह हैं जंगल के किनारे बसे गांव

उत्तरी चौक रेंज के जंगल से सटे गांव चकदह का मनिकापुर, बेलभार, महुलैना, घरोही,शाहपुर तथा मगरभौली, रामनगर गांव का पोखरहवां टोला, हनुमानगढ़िया, कुसमहवा, बरतानी, चरैया, भठवा, कजरी, चुड़िहारी, करौता, गंगावलिया, सेमरहवा, चकदह, रामनगर, हनुमानगढ़िया आदि गांव हैं। करीब दो सौ एकड़ में सब्जी की खेती हुई है। लोगों को जागरूक किया जा रहा है। जंगल के किनारे वन कर्मियों की गश्त बढ़ा दी गई है। लोगों ने अपील है कि अकेले खेत की तरफ न जाएं। जंगल के किनारे तार बाड़ लगाने की अभी कोई व्यवस्था नहीं है। लोगों को बचाव के प्रति सचेत रहने की जरूरत है। –रामबरन यादव, रेंजर, उत्तरी चौक

अक्सर जंगल से निकलते हैं तेंदुए

–17 अप्रैल 2021 लक्ष्मीपुर रेंज के पिपरा सोहट के मैरी गांव में तेन्दुए खेत में काम कर रहे दो किसानों को घायल कर दिया था।

–8 अगस्त 2020 को ग्राम सभा बड़हरा चरगहां में झोपड़ी की टाट को फाड़ कर तेंदुआ अंदर घुस गया और घर में बंधी बकरी पर हमला कर उसे अपना शिकार बना लिया।

–25 अप्रैल2020 को जंगल से सटे गांव बड़हरा चरगहा के टोला छावनी निवासी विनोद चौहान के झोपड़ी में बंधी एक बकरी को तेंदुआ मार जंगल में उठा ले गया था।

–26 मई 2020 को निचलौल रेंज के उत्तरी बीट से सटे रामचन्द्रही में केले के खेत मे काम कर रहे लोगों पर तेंदुआ ने दिनदहाड़े हमला बोल दिया था। जिस दौरान संदीप, राजन, सुदर्शन,गजेंद्र मौर्य,गणेश गौंड़ गंभीर रूप से घायल हुए थे।

– 28 नवंबर 2021 को बरतानी टोला के एक बालक को मार डालने के साथ ही रात में ही गाय को घायल कर दिया।

–11 अगस्त 2022 को उत्तरी चौक रेंज के घोड़ाहवा बीट के जंगल से सटे गांव चकदह टोला बेलभार के गांव के पिंटू यादव का 10 वर्षीय बेटा अमित यादव को तेंदुए ने मार डाला

पात्र व्यक्ति को ही मिले योजनाओं का लाभ : ग्राम्य विकास राज्यमंत्री

देवरिया। ग्राम्य विकास राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम ने विकास भवन स्थित गांधी सभागार में विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सरकार समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध है। सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों को ही मिले।

समीक्षा बैठक में ग्राम्य विकास राज्य मंत्री ने स्वास्थ्य विभाग और बिजली निगम के कार्यों पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। कहा कि इन दोनों विभागों को जन अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। ग्राम्य विकास राज्यमंत्री ने प्रभारी सीएमओ डॉ. सुरेंद्र सिंह को जनपद के समस्त सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सतत निगरानी करने के निर्देश दिए। स्वास्थ्य केंद्रों पर मरीजों के टेस्ट किए जाएं, यदि कहीं किसी जांच मशीन में खराबी है तो उसे अविलंब दुरुस्त करा लिया जाए। उन्होंने गो–वंश संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

बेसिक शिक्षा अधिकारी हरिश्चंद्र नाथ ने ग्राम्य विकास राज्य मंत्री को बताया कि स्कूल चलो अभियान के तहत जनपद में कुल 52,787 बच्चों का नामांकन इस वर्ष कराया गया है। ग्राम्य विकास राज्य मंत्री ने बीएसए को स्कूलों की निगरानी और प्रभावी ढंग से करने के निर्देश दिए। जिला पूर्ति अधिकारी ने ग्राम्य विकास राज्य मंत्री को अवगत कराया कि जनपद में कुल 5,27,502 पात्र गृहस्थी योजना एवं अंत्योदय कार्ड योजना धारियों को जुलाई माह में 1,13,260 क्विंटल चावल का वितरण किया गया है। जनपद के समस्त नगर निकायों के 166 वार्डों में कूड़े का डोर–टू–डोर कलेक्शन किया जा रहा है।

जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने ग्राम्य विकास के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर करें। बैठक के उपरांत ग्राम्य विकास राज्य मंत्री ने स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाये गए उत्पादों के स्टॉल का निरीक्षण भी किया। उन्होंने कहा कि इस तरह की पहल से महिला सशक्तीकरण को बल मिलेगा और महिलाएं आत्मनिर्भर होंगी।

समीक्षा बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष गिरीश चंद तिवारी, सीडीओ रवींद्र कुमार, डीएफओ जगदीश आर, डीसी मनरेगा बीएस राय, डीपीओ कृष्णकांत राय, डीपीआरओ कृष्णकांत राय, अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी आरके सिंह सहित विभिन्न अधिकारी मौजूद थे।

पोषण जागरुकता रैली को किया रवाना

देवयरिया। ग्राम्य विकास राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम ने विकास भवन परिसर में पोषण माह के अंतर्गत पोषण जागरुकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि बच्चों, किशोरियों एवं महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार, व इसके लिए प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

लक्ष्मीपुर रेलवे स्टेशन पर नौतनवा दुर्ग एक्सप्रेस को केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री ने दिखाई हरी झंडी

दैनिक बुद्ध का संदेश

लक्ष्मीपुर/महराजगंज। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने शनिवार

सुबह लक्ष्मीपुर रेलवे स्टेशन पर नौतनवा दुर्ग एक्सप्रेस ट्रेन का पहली बार ठहराव कराया और उसे लक्ष्मीपुर रेलवे स्टेशन पर हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर लक्ष्मीपुर रेलवे स्टेशन को रेल विभाग द्वारा फूल माला से पूरी तरह सजाया गया था। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी तथा नौतनवा विधानसभा के विधायक ऋषि त्रिपाठी का फूल माला पहनाकर लोगो ने भव्य स्वागत किया। इसके उपरांत विधायक ऋषि त्रिपाठी ने पंकज चौधरी का स्वागत करते हुए कहा कि मेरे एक प्रस्ताव पर केंद्रीय मंत्री रेल मंत्री से मिलकर नौतनवा से चलने वाली दुर्ग एक्सप्रेस के ठहराव के लिए वार्ता किया जिसका परिणाम आज हम लोगों को देखने के लिए मिल रहा है। लक्ष्मीपुर की जनता मे खुशी व्याप्त है। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि 2014 के पहले रेलवे में बजट का राजनीतिकरण किया जाता था, लेकिन अब मोदी की सरकार ने रेल बजट को मुख्य बजट से जोड़ दिया है जिसके कारण रेलवे का चतुर्मुखी विकास हो रहा है। पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक ने केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री को पौधा देकर तथा अंग वस्त्र ओढा कर उनका सम्मान किया। इसके पुर्व विधायक नौतनवा ऋषि त्रिपाठी ने नौतनवा विधानसभा के बड़ी संख्या में लोगों के साथ ललाइन पैसिया चौराहे पर वित्त राज्य मंत्री का फूल माला पहनाकर स्वागत किया। स्वागत के इस क्रम में मुख्य रूप से गुड्डू खान, जितेंद्र जायसवाल, प्रदीप सिंह, अशोक जायसवाल, बृजेश मणि त्रिपाठी, अखिलेश तिवारी, राजन बर्मा, कन्हैया साहू ,प्रदीप पांडे सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

पशु तस्करों ने एसपी नार्थ के गाड़ी में मारी टक्कर, बड़ी घटना घटित होने से बचा

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। शहर में पशु तस्करों को आतंक इस समय एक बार फिर बढ़ गया है। पिकअप सवार पशु तस्करों ने शनिवार की भोर में गुलरिहा क्षेत्र में पीछा कर रही पीआरवी (पुलिस रिस्पांस व्हीकल) पर पथराव कर दिया। यहीं नहीं ओवरटेक करने का प्रयास करने पर गाड़ी में टक्कर मार दी। घटना की जानकारी होने पर मेडिकल कालेज चौकी पर मौजूद एसपी नार्थ ने फोर्स के साथ तस्करों का पीछा किया तो बरगदहीं के पास एसपी नार्थ मनोज अवस्थी की गाड़ी में भी टक्कर मार दी। जिससे उनकी गाड़ी अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे के बाद तस्कर पुलिस टीम पर पथराव करते हुए महराजगंज जिले की तरफ फरार हो गए। उधर गनीमत रही कि एसपी नार्थ सकुशल बच गए। उस समय कोई वरिष्ठ अधिकारी एसपी नॉर्थ के अलावा नहीं मौजूद रहा डेल्टा द्वारा कोई रिस्पांस नहीं दिया गया संयोग ठीक रहा कि कोई बड़ी घटना घटित नहीं हुआ और एसपी नार्थ सकुशल सुरक्षित है केवल उनकी गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई। शनिवार की रात्रि में दो बजे एसपी नार्थ मनोज अवस्थी मेडिकल कॉलेज चौकी पर उत्तरी सर्किल के सभी थानेदारों की बैठक ले रहे थे। इसी दौरान सूचना मिली कि शहर की तरफ से भाग रहे पिकअप सवार पशु तस्करों ने पीआरवी 331 पर पथराव करने के साथ ही टक्कर मार दिया।घटना के बाद वह भटहट की तरफ भाग रहे हैं।फोर्स के साथ एसपी नार्थ पशु तस्करों के पीछे लग गए।बरगदहीं में तस्करों की गाड़ी को ओवरटेक करने के दौरान उनकी स्कार्पियों डिवाइडर से टकराकर क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में एसपी नार्थ बाल–बाल बचे। उनके साथ चल रहे पुलिसकर्मियों ने तस्करों का पीछा किया लेकिन वह पथराव करते हुए महराजगंज जिले के श्यामदेऊरवां की तरफ निकल गए। पिकअप सवार पशु तस्करों के शहर में आने की सूचना पर एसएसपी डा गौरव ग्रोवर ने पूरे जिले की नाकाबंदी करा दी। एसपी सिटी कृष्ण कुमार विश्नोई के साथ ही क्राइम ब्रांच, गुलरिहा, पिपराइच, चौरी चौरा, झंगहा, कैंट, शाहपुर, गोरखनाथ, पीपीगंज, रामगढ़ताल, बेलीपार, गीडा, सहजनवां और कैंपियरगंज पुलिस ने हाइवे और शहर से बाहर निकलने वाले सभी रास्तों पर चेकिंग शुरू कर दी।भोर में पांच बजे तक पुलिस पशु तस्करों की घेराबंदी में लगी रही लेकिन पता नहीं चल सका। इस संबंध मे एसपी नार्थ मनोज अवस्थी ने बताया कि पशु तस्करों के शहर से गुलरिहा की तरफ भागने की सूचना पर फोर्स के साथ घेराबंदी में लगा था। पीछा करते समय गोरखपुर–महराजगंज हाइवे पर गाड़ी डिवाइडर से टकरा गई। पशु तस्करों ने वाहन क्षतिग्रस्त नहीं किया है। पशु तस्करों का हौसला इतना बुलंद है कि पुलिस के ऊपर अनेकों बार हमला कर चुके हैं जब तक इनके ऊपर कारगर कठोर कार्रवाई नहीं की जाएगी तब तक पुलिस के ऊपर हमला करते रहेंगे और कभी कोई बड़ी घटना घटित पशु तस्करों द्वारा किया जा सकता है। पशु तस्करों ने अब तक दर्जनों बार पुलिस पर हमला कर फरार होने में सफलता प्राप्त की है।

- पीआरवी पर किया पथराव, 7 तस्करों पर केस दर्ज
- गाड़ी डिवाइडर टकराई है ना कि पशु तस्करों के गाड़ी से: एसपी नार्थ

विद्युत आपूर्ति की लचर व्यवस्था से लोग नाराज

बृजमनगंज (महराजगंज)। कस्बे में लो वोल्टेज, विद्युत कटौती एवं जर्जर तार की समस्या दूर नहीं होने से नाराज लोगों ने अवर अभियंता को ज्ञापन सौंपा। कहा कि समस्या दूर नहीं हुई तो 12 सितंबर से आंदोलन तेज करेंगे। सपा नेता विनोद जायसवाल, जिला पंचायत सदस्य राहुल शर्मा ने कहा कि बिजली आने–जाने का कोई समय नहीं है। रहती भी है तो लो वोल्टेज के कारण लोग परेशान रहते हैं। उन्होंने कहा कि जर्जर तार बदलने में भी निगम रुचि नहीं ले रहा है। विद्युत से संचालित होने वाले उपकरण बेकार पड़े हैं। दिन में दो से तीन घंटे बिजली मिल पा रही है। विद्युत आपूर्ति की बदहाल व्यवस्था से क्षेत्र में कारोबार पर असर पड़ रहा है। बच्चों, बीमारों, बुजुर्गों को उमस से परेशानी हो रही है। रात में भी बिजली का यही हाल है। विद्युत निगम के अधिकारियों को जनता की समस्या से कोई मतलब नहीं रह गया है। इस दौरान अजय, उमेश, संजय, शिवा, रामगोपाल, मोनू, विजयपाल, रामू शर्मा, लक्ष्मण, अनिल, शिब्बन आदि मौजूद रहे।

हॉस्पिटल संचालक की बेटी ने की खुदकुशी

गोरखपुर। चौरी–चौरा थाना क्षेत्र के डुमरी खुर्द स्थित चंद्रा हॉस्पिटल के संचालक की बेटी आकांक्षा (21) ने खुदकुशी कर ली। उसने बुधवार को जहरीला पदार्थ खा लिया था। उसे मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया जहां गुरुवार की रात में मौत हो गई। फिलहाल, युवती ने खुदकुशी क्यों की यह स्पष्ट नहीं हो सका है। चौरीचौरा निवासी हॉस्पिटल संचालक डॉ. भगवानदास पत्नी की हत्या के मामले में 14 साल तक जेल में रहने के बाद कुछ महीने पहले ही रिहा होकर घर लौटे हैं। हाईकोर्ट ने उन्हें इस मामले में उन्हें बरी किया है। आरोप था कि उन्होंने अपनी पत्नी की हत्या जहर का इंजेक्शन देकर की गई थी।उनकी बेटी आकांक्षा 12वीं की छात्रा थी। उसने जहर खाकर जान दे दी। पिता डॉ. भगवानदास के मुताबिक बुधवार की दोपहर में किसी कारणवश आकांक्षा ने जहरीला पदार्थ खा लिया। तबीयत बिगड़ने पर उसे बीआरडी मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था। जहा इलाज के दौरान गुरुवार की रात उसकी मौत हो गई। डॉ. भगवानदास का कहना है कि उनकी बेटी की मौत जहर खाने से हुई है लेकिन उसने किस वजह से जहर खाया इसकी जानकारी उन्हें नहीं है।

शिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण करें अधिकारी- सीडीओ

स्तरीय संपूर्ण समाधान दिवस तहसील तुलसीपुर सभागार में मुख्य विकास अधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। शासन की मंशानुरूप आमजनमानस की शिकायतों एवं समस्याओं के प्रभावी ढंग से निस्तारण हेतु संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन के सभी तहसीलों में संपन्न हुआ। तहसील तुलसीपुर में मुख्य विकास अधिकारी संजीव कुमार मौर्य एवं पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार सक्सेना ने संपूर्ण समाधान दिवस में सुनी फरियादियों की शिकायतें सम्बन्धित अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण का निर्देश दिया । उन्होंने कहा कि सभी विभागाध्यक्ष शिकायतों का निस्तारण स्वयं करें, इसकी निगरानी निरन्तर करते रहे। उन्होंने कहा कि जमीनी विवाद, अवैध अतिक्रमण, नाली, चकरोट आदि मामलों में पुलिस एवं राजस्व की संयुक्त टीम द्वारा मौके पर जाकर विवाद का निस्तारण करें। सभी लेखपाल

एवं राजस्व निरीक्षकों को निर्देश दिया गया कि सरकारी जमीनों पर किसी भी प्रकार का अवैध अतिक्रमण न होने दें। केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का समस्त अधिकारी पात्र लाभार्थियों को लाभ अवश्य दिलाएं, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं की जायेगी। संपूर्ण समाधान दिवस में जनता की समस्याओं को सुनते हुये मुख्य विकास अधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर किसी भी प्रकार की शिकायत लम्बित न रहे, शासन एवं जनपद स्तर पर निरंतर इसकी निगरानी की जा रही है। संपूर्ण समाधान दिवस तुलसीपुर में कुल 46 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें से मौके पर 10 शिकायतों का निस्तारण किया गया। शेष शिकायतों का तीन दिवस के भीतर संबंधित विभागों के अधिकारी स्थलीय सत्यापन करते हुए गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करेंगे। इस दौरान एसडीएम मंगेलेश दूबे, तहसीलदार प्रमेश कुमार, सीओ कुँवर प्रभात् सिंह, उप निदेशक कृषि डा0 प्रभाकर सिंह, जिला कृषि अधिकारी आर0पी0 राना, अधिशासी अभियन्ता नलकूप, डीआईओएस व अन्य जनपद स्तरीय अधिकारीध्कर्मचारीगण उपस्थित रहे। तहसील बलरामपुर में अपर जिलाधिकारी न्यायिक ज्योति गौतम की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। संपूर्ण समाधान दिवस में 27 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें से मौके पर 03 प्रार्थना पत्र का निस्तारण कर दिया गया, शेष शिकायतों का संबंधित विभाग के अधिकारी तीन दिवस के भीतर स्थलीय सत्यापन करते हुए निस्तारण सुनिश्चित करेंगे। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक नम्रिता श्रीवास्तव, तहसीलदार अरुण कुमार व अन्य तहसील स्तरीय अधिकारीध्कर्मचारीगण मौजूद रहे। तहसील उतरौला संपूर्ण समाधान दिवस एसडीएम संतोष ओझा की अध्यक्षता सम्पन्न हुआ। इस दौरान फरियादियों द्वारा 32 प्रार्थना पत्र दिये गये, जिसमें से मौके पर 05 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण कर दिया गया, शेष प्रार्थना पत्रों का निस्तारण संबंधित विभागों के अधिकारी स्थलीय सत्यापन करते हुए तीन दिवस के भीतर करना सुनिश्चित करेंगे। इस दौरान समस्त तहसील स्तरीय अधिकारीध्कर्मचारी मौजूद रहे।

अखिल भारतीय फार्मासिस्ट एसोसिएशन ने झोंकी ताकत

- एबीपीए का प्रचार प्रसार जोरो से
- शएबीपीए ने विकास का किया वादा

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। अखिल भारतीय फार्मासिस्ट एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शनिवार को गोंडा शहर, परसपुर, नवाबगंज, कर्नलगंज में फार्मासिस्ट साथियों से मिलकर संघठन के चुनाव के बारे में बताया। जिला अध्यक्ष हरि ओम सिंह ने बताया कि संगठन हर समय फार्मासिस्ट साथियों के साथ हमेशा खड़ा है, सभी साथी अखिल भारतीय फार्मासिस्ट एसोसिएशन को अपना अमूल्य वोट दे और सपोर्ट करे। सिंह ने बताया कि आप सभी फार्मासिस्ट साथी संगठन द्वारा समर्पित 4 प्रत्याशी अभय कुमार वर्मा, मुनित त्यागी, नवीन कुमार वर्मा,प्रदीप कुमार शुक्ला,को वोट देकर विजई बनाए जिससे बेरोजगार फार्मासिस्टो का उत्थान हो सके। जिलाध्यक्ष ने कहा की सभी साथी कंधे से कंधा मिलाकर साथ चले जिससे उत्तर प्रदेश फार्मेसी काउंसिल में फैले भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त किया जा सके। इस मौके पर विकास सिंह, एस के शुक्ला, कृष्ण सैनी, अमित गुप्ता, मोहित सिंह, मनोज सैनी, अमर श्रीवास्तव, ऋषभ शुक्ला,आशुतोष पांडेय,आदि मौजूद रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार घायल, गंभीर

गोरखपुर,। गुलरिहा थाना क्षेत्र के फुलवरियां चौराहे पर शुक्रवार की देर रात लगभग एक बाइक सवार युवक सामने से आ रहे साइकिल चालक से टकरा गया,जिससे वह गंभीर रूप से बाइक चालक घायल हो गया। जिसे इलाज के लिए बीआरडी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया,जहां हालत गम्भीर बताई जा रही है। बताया जाता है की उपरोक्त क्षेत्र के करमहां बुजुर्ग निवासी राहुल पुत्र स्व.पारस 26 वर्षीय शाम को बाइक से घर लौट रहा था। फुलवरियां नहर चौराहे पर साइकिल सवार से टकरा गया। लोगों का कहना है कि घटना स्थल के पास देसी शराब की दुकान है। शाम को शराबियों की भारी भीड़ लगती है। ऐसे में आये दिन दुर्घटनाएं होती रहती है।

विविः कुलसचिव व परीक्षा नियंत्रक को छात्र–छात्राओं ने ज्ञापन सौंपा

गोरखपुर,।गोरखपुर विश्वविद्यालय के छात्र नेता सत्यम गोस्वामी और प्रतीक त्रिपाठी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक को संयुक्त रूप से डब्ब्ड प्रवेश परीक्षा परिणाम के उत्तर कुंजी जारी करने तथा परीक्षा परिणाम में हुई गड़बड़ी को 2 दिन के भीतर ठीक करने हेतु ज्ञापन सौंपा।छात्र नेता सत्यम गोस्वामी व सम्राट त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से कहा कि कुलसचिव ने डब्ब्ड प्रवेश परीक्षा परिणाम में हुई गड़बड़ी को ठीक करने हेतु दो दिन का समय माँगी है । यदि दो दिन में छात्रों की समस्या का समाधान नहीं हुआ तो धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे। ज्ञापन सौंपने वालों में हर्षिता गुप्ता, खुशी यादव, मनीष सिंह, सम्राट शिवम त्रिपाठी, अजीत पांडे,मुकेश यादव, नेहा गुप्ता, आलोक नाथ यादव, प्रियंका, रोशन श्रीवास्तव, कृतिका, आकाश यादव आदि छात्र–छात्राएं मौजूद रहे।

अयोध्या श्री हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास महाराज का भव्य स्वागत

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। गौरा चौराहा स्थानीय थाना के अंतर्गत वर्मा पेट्रोल पम्प पर आयोजित युवा विकासवादी सेवा समिति द्वारा संचालित युवा विकासवादी संघर्ष मंच के कार्यक्रम में पधारे अयोध्या श्री हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास महाराज का भव्य स्वागत किया गया और महाराज को संगठन द्वारा राष्ट्रीय संरक्षक मनोनीत किया गया और मनोनयन पत्र सौंपा गया महाराज ने संगठन पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुए संगठन के अबतक किये कार्यों की प्रशंसा की साथ ही बताया कि संगठन के राष्ट्रीय संरक्षक के रूप में संगठन द्वारा आयोजित प्रत्येक लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे महाराज जी प्रदेश सरकार की तारीफ करते हुए कहा कि योगी सरकार सभी धर्मों और समाज के लिए एक समान रूप से कार्य कर रहें हैं एवं सभी विकास कार्यों और योजनाओं

का लाभ सबके लिए दिया है माफिया और गुंडों के विरुद्ध सरकार कड़ी कार्यवाही कर रही है किसी भी धर्म सम्प्रदाय को निशाना नही बनाया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील शुक्ला ने महाराज और उनके साथ आये महंत धर्मदास एवं गेल्हापुर महंत बृजानंद महाराज शिष्य दीपक दास एवं टिंकू दास का माल्यार्पण कर अंगवस्त्र भेंट करके स्वागत किया एवं महाराज को संगठन के राष्ट्रीय संरक्षक का पद स्वीकारने हेतु धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में संगठन के तमाम सदस्य और पदाधिकारी उपस्थित रहे जिसमें मार्कदर्शक राम जियावन वर्मा, सलाहकार अनिल शर्मा उपाध्यक्ष सुधीर पटेल विधि सलाहकार विष्णु मिश्रा कोषाध्यक्ष सतीश जायसवाल संगठन मंत्री फजलू, उप प्रबंधक अमित सिंह, डॉ विजय पांडेय, अमरेंद्र वर्मा, राम कुमार गुप्ता, शिव कुमार जायसवाल, आबर प्रधान एम डी यादव, नंदनगर ठठिया प्रधान प्रतिनिधि विनय मिश्रा, बबलू जायसवाल राम उग्गर यादव शिवम गुप्ता, दिव्यांशु शुक्ला आदि प्रदाधिकारियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया उक्त अवसर पर प्रधान संघ के उपाध्यक्ष त्रिपाठी, जनार्दन मिश्र, अधिवक्ता दिनेश तिवारी, मनोज कुमार, कुलदीप, मनीष वर्मा गौरा थाना प्रभारी विनय यादव सहित तमाम स्थानीय निवासी उपस्थित रहे।

छोटा राज्य होगा तभी सोनभद्र का विकास होगा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पूर्वांचल राज्य की मांग कर रहे संगठन पूर्वांचल राज्य जनमोर्चा की एक बैठक तहसील परिसर रावर्ट्सगंज में

शनिवार को प्रदेश महासचिव वीरेंद्र कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बैठक में पूर्वांचल राज्य बनाने एवं जनपद सोनभद्र की समस्याओं पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया। संगठन प्रमुख पवन कुमार सिंह ने कहा कि पूर्वांचल राज्य बनने से प्रशासनिक ढांचा तो मजबूत होगा। राजनीतिक दृष्टि से भी लोगों को लाभ मिलेगा। केंद्राश का लाभ भी मिलने लगेगा। लेकिन सबसे बड़ी चीज जो है कि रोजगार का सृजन होगा। क्योंकि राज्यों के गठन में प्राकृतिक संसाधन सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे में सभी चीजें राज्य बनाने के लिए उपयुक्त हैं इसलिए पूर्वांचल राज्य बनेगा तो यहां एम्स एवं केंद्रीय विद्यालय की स्थापना भी होगी। प्रदेश अध्यक्ष विमलेश कुमार त्रिपाठी ने कहा की यूपी जनसंख्या 25 करोड़ के लगभग है जनसंख्या के लिहाज से उत्तर प्रदेश दुनिया का पांचवा देश है। यानी देश भी इससे बड़े केवल चार ही है। यूपी हमेशा राजनीतिक साजिश का शिकार है। इसका कम से कम तीन हिस्सो में विभाजन होना चाहिए। और हमें हमारा पूर्वांचल राज्य मिलना चाहिए। संचालन प्रदेश सचिव संतोष चतुर्वेदी ने किया इस अवसर पर नागेंद्र नाथ चौबे एडवोकेट, काकू सिंह, अशोक कुमार कनौजिया एडवोकेट, दीप नारायण पटेल, विकास पाठक, चंदन, अनूप, रिंकू, राजेश, दिनेश स्वरूप, नवीन कुमार पांडेय, सतनाम सिंह आदि लोग उपस्थित थे।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
राष्ट्रीय दैनिक बुद्ध का संदेश	
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

नौकरी दिलाने के नाम पर फर्जी नियुक्ति पत्र देने वाले दम्पत्ति गिरफ्तार

गोरखपुर,। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद गोरखपुर के निर्देशन में तथा पुलिस अधीक्षक नगर जनपद गोरखपुर के पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी कैण्ट के मार्गदर्शन में वरिष्ठ उपनिरीक्षक कमलेश प्रताप सिंह थाना रामगढताल जनपद गोरखपुर के नेतृत्व में उ0नि0 शम्भूदयाल मिश्र मय हमराह पुलिस टीम द्वारा मुखबिर के माध्यम से प्राप्त सूचना एवं उक्त पुलिस टीम की त्वरित सक्रियता से थाना रामगढ़ताल, जनपद गोरखपुर पर पंजीक मु0अ0सं0 463ध्2021 धारा 419,420,467,468,471,406 भादवि से सम्बन्धित अभियुक्तगण मीना त्रिपाठी पत्नी उमेश त्रिपाठी व उमेश त्रिपाठी पुत्र रामधारी त्रिपाठी निवासीगण चारपान खुर्द, थाना बेलीपार, जिला–गोरखपुर को गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया जहा से जेल भेज दिया गया।

अनुभव से होता है समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का निर्माणःप्रो. अजीत कुमार पाण्डेय

गोरखपुर,। समाजशास्त्र एक परिप्रेक्ष्य है, जिसका निर्माण अनुभव से होता है। अपने अस्तित्व में आने से लेकर वर्तमान तक समाजशास्त्र के परिपेक्ष्य में कई नए आयाम जुड़ते रहे हैं। समाज एक जटिल परिघटना है जिसमें बहुत सी जटिलताएँ हैं। समाजशास्त्र के समर्थन के बिना इसकी कई समस्याओं को समझना और हल करना असंभव है।सामाजिक घटनाओं को समझने में समाजशास्त्र ने कई परिप्रेक्ष्य विकसित किए है और आज उत्तर आधुनिकता से भी आगे बात हो रही है। उक्त वक्तव्य दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में श्सोशियोलॉजी टुडेरू प्रॉबलम्स एंड प्रॉस्पेक्ट्सश विषय आयोजित किए गए विशेष व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए बीएचयू के समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अजीत कुमार पाण्डेय ने दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. संगीता पाण्डेय ने संबोधित करते हुए कहा कि नई बदलती समाजिक संरचना और समाज की प्रवृत्ति को समझने के लिए समाजशास्त्र एक व्यापक आधार देता है। इस दौरान विभाग केशिक्षक डॉ.अनुराग द्विवेदी शोध छात्र मंतोष यादव, अंजली, देवेंद्र, सुधीर समेत समाजशास्त्र विषय अनेक छात्र एवं छात्राओं की उपस्थित रही।

धौरहरा मौर्य बस्ती का हाल बेहाल, देखें हाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। स्थानीय विकास खण्ड के धौरहरा मौर्य बस्ती व हरिजन बस्ती का हाल बेहाल, जच्चा बच्चा लेकर जा रही एम्बुलेंस कीचड़ में फसी, ड्राइवर के सजगता से हादसा होने से टला। प्राप्त जानकारी के अनुसार कर्मा पुल नहर से होते हुए मोती सिंह प्राथमिक विद्यालय का रास्ता धौरहरा हरिजन बस्ती व मौर्य बस्ती जाता है। जो लगभग डेढ़, दो किलोमीटर का है। आज लगभग दोपहर के बाद जच्चा बच्चा को सकुशल पहुचाने के लिए अस्पताल से एम्बुलेंस धौरहरा के हरिजन बस्ती के लिए चली। वर्षा हो जाने के कारण एम्बुलेंस घर पहुचाने से पहले स्लीप करते हुए नाली के खाई में जाते जाते ड्राइवर के सजगता के कारण बच गई। किसी ने इसका वीडियो वायरल कर दिया। वायरल वीडियो में दिखाया गया है कि रास्ते की हालत बेहद खराब है, जहां वर्षा ऋतु में पैदल चलना नामुमकिन है। लोगों की मानें तो इस बस्ती की आबादी लगभग 300 के पार है। इस रास्ते से लगभग चार विद्यालयों के विद्यार्थियों को आना जाना पड़ता है। कई बार जनप्रतिनिधियों के ध्यान आकर्षित किया गया परंतु ढाक के तीन पात वाली कहावत चरितार्थ है। वोट लेकर जनप्रतिनिधियों का पलायन हो जाता है, हम समस्याओं के घाट पर तौलिया लपेटे चुनाव आने तक इंतजार करते रहते हैं। वैसे तो सरकार का फरमान जारी है कि हर गांव की लिंक रोड मुख्य मार्ग से पक्की सड़क होगी। स्थानीय लोगों ने सम्बंधित अधिकारी व जनप्रतिनिधियों का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया है।

मेंहदी में मिलाकर लगाएं ये 5 चीजें, सफेद बाल होंगे नैचुरली काले

सफेद बालों को छुपाने के लिए सबसे ज्यादा अगर लोग कोई चीज बालों में लगाते हैं, तो वह है मेंहदी। क्योंकि मेहंदी बालों को नेचुरल कलर करने का सबसे उपाय है। यह न सिर्फ सफेद बालों को काला करने में मदद करती है, बल्कि उन्हें काला बनाने में भी बहुत लाभकारी है। यह बालों में आर्टिफिशियल और केमिकल से भरपूर कलर या डाई की तरह बालों को नुकसान भी नहीं पहुंचाती है। बल्कि बालों को कई समस्याओं को दूर करने में मदद करती है। लेकिन क्या आप जानते हैं, अगर आप मेंहदी में कुछ चीजें मिलाकर बालों में लगाते हैं, तो यह सफेद बालों प्रभावी रूप से काला और शाइनी बनाने में मदद करती है? जी हां, आपने बिल्कुल सही पढ़ा! इस लेख में हम आपको ऐसी 5 चीजों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें मेहंदी में मिलाकर लगाने से सफेद बालों को नेचुरल काला करने में मदद मिलेगी। साथ ही आप आपको इन्हें मेंहदी में किस तरह मिलाना चाहिए।

बालों को काला करने के लिए मेहंदी में क्या मिलाएं–

तेल मिलाएं: सरसों, नारियल तेल या अरंडी के तेल में मेहंदी मिलाकर बालों में लगाते हैं, तो यह

बालों को जल्द काला करने में मदद करती है। आपके तेल में 50द्वद्य तेल में 2–3 चम्मच मेंहदी पाउडर मिलाकर इसे किसी लोहे के बर्तन जैसे कढ़ाई में गर्म कर लेना है। इसे तब तक गर्म करें जब तक कि यह मिश्रण काला न हो जाए। इसे ठंडा होने दें और किसी कांच की शीशी में स्टोर कर लें। इसे नहाने से कम से कम 4 घंटे पहले या रात भर के लिए बालों में लगाकर छोड़ दें। किसी माइल्ड शैंपू से सिर धो लें। हफ्ते में 2–3 बार लगाएं।

आंवला मिलाएं: सफेद बालों की समस्या दूर करने में आंवला एक कारगर औषधि है। आपको बस किसी बर्तन में 2 आंवला या एक चम्मच आंवला पाउडर डालना है, फिर इसमें 2–3 चम्मच मेंहदी पाउडर डालकर मिक्स करना है। इसमें पानी मिलाएं और स्मूद पेस्ट बना लें। इसे बालों में लगाएं और 4–5 घंटों के लिए छोड़ दें और माइल्ड शैंपू से धो लें। आप इसे रातभर बालों पर लगाकर भी छोड़ सकते हैं। हफ्ते में 2–3 बार लगाएं।

कॉफी और इंडिगो मिलाएं

इंडिगो भी बालों को नैचुरल काला रंग प्रदान करने में मदद करता है, वहीं कॉफी भी बालों को एक शाइनी हल्का बरगंडी कलर प्रदान करने में लाभकारी है। 2–3 चम्मच मेहंदी में बराबर मात्रा में इंडिगो पाउडर, एक एक छोटा चम्मच कॉफी पाउडर डालें। इसमें गर्म पानी मिलाएं और पेस्ट बना लें। इसे बालों में लगाएं और 4–5 घंटों के लिए छोड़ दें और शैंपू से धो लें। हफ्ते में 2–3 बार लगाएं।

केला मिलाएं: केला भी बालों को काला करने में बहुत लाभकारी है। आपको एक पके हुए केले को अच्छी तरह क्रश करके एक पेस्ट बना लेना है, उसके बाद में इसमें 2–3 चम्मच मेंहदी पाउडर मिलाना है। इसका एक पेस्ट बना लें और इसे कम से 10–15 मिनट के लिए बालों पर लगाकर छोड़ दें। उसके बाद शैंपू से धो लें। हफ्ते में 2–3 बार लगाएं।

अंडा और नींबू मिलाएं: अंडा बालों के लिए बहुत फायदेमंद होता है, वहीं नींबू में विटामिन सी प्रचुर मात्रा होती है। मेहंदी, अंडा और नींबू का कॉम्बिनेशन बालों को काला करने में बहुत लाभकारी री है। बस आपको 2–3 चम्मच मेंहदी में 1 अंडे का सफेद भाग और 2–3 चम्मच नींबू का रस और जरूरत के अनुसार पानी मिलाएं। पेस्ट बना लें और इसे बालों में लगाकर 4–5 घंटे के लिए छोड़ दें। उसके बाद धो लें। हफ्ते में 2–3 बार लगाएं।

फिल्मों में वापसी के लिए तैयार है दिव्या स्पंदना, ट्वीट कर किया बड़ा ऐलान

कन्नड़ एक्ट्रेस दिव्या स्पंदना उर्फ राम्या ने ट्वीट कर बताया कि वह अब फिर से कमबैक कर रही हैं लेकिन इस बार राजनीति में नहीं बल्कि सिनेमा में। गणेश चतुर्थी के मौके पर दिव्या ने

लिखा कि वह अपने बुटीक प्रोडक्शन हाउस एप्पल बॉक्स स्टूडियोज से फिल्म प्रोड्यूसर के तौर पर डेब्यू करने वाली हैं। इसके अलावा उन्होंने बताया कि फिलहाल वह दो फिल्में प्रोड्यूस कर रही हैं, जिन्हें कार्तिक गोडवा और केआरजी स्टूडियोज के योगी जी राज द्वारा डिस्ट्रिब्यूट किया जाएगा। दिव्या स्पंदना राजनीति से ब्रेक लेने के 3 साल बाद एक बार फिर से कमबैक के लिए तैयार हैं। साल 2019 में दिव्या ने राजनीति से ब्रेक ले लिया था और अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। दरअसल दिव्या कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल टीम की हेड थीं। दिव्या के इस्तीफे के बाद ऐसी अफवाहें उड़ी थीं कि वह कांग्रेस पार्टी के 8 करोड़ रुपये लेकर भाग गई हैं, जिसके बाद दिव्या ने इस मामले में अपनी सफाई दी थी और इन सभी अफवाहों को खारिज कर दिया था। अब दिव्या एक बार फिर से दिव्या वापसी कर रही हैं। एक्ट्रेस दिव्या स्पंदना ने साल 2012 में फिल्मों को छोड़ दिया था और कांग्रेस पार्टी की यूथ विंग के सदस्य बन गई थीं। साल 2013 में दिव्या ने कार्नाटक की मंड्या निर्वाचन क्षेत्र से उप चुनाव जीता था और वह एमपी बन गई थीं। लेकिन अगले साल यानी 2014 में मोदी लहर के कारण वह आम चुनाव हार गई थीं।

सत्यप्रेम की कथा के लिए खुद को बदलेंगे कार्तिक आर्यन, दिखेगा नया अवतार

कार्तिक आर्यन बीते दिनों अपनी फिल्म भूल भुलैया 2 की सफलता के बाद छा गए थे। इस फिल्म में कार्तिक के साथ कियारा आडवाणी नजर आई थीं। अब कार्तिक अपनी नई फिल्म को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में उनकी फिल्म सत्यप्रेम की कथा की रिलीज डेट की घोषणा हुई थी। खबर है कि इस फिल्म के लिए कार्तिक कड़ी तैयारी करेंगे। फिल्म में उनका जबरदस्त ट्रांसफॉर्मेशन देखने को मिलेगा। रिपोर्ट के अनुसार इस फिल्म के लिए कार्तिक अपने शारीरिक व्यक्तित्व को काफी हद तक बदल देंगे। इसके लिए वह कड़ी तैयारी करेंगे। कार्तिक अपना काफी समय वर्कशॉप्स और ट्रेनिंग में बिताएंगे। सिर्फ शारीरिक बनावट ही नहीं, कार्तिक अपनी आवाज के उतार–चढ़ाव को बदलने पर भी काम करेंगे। कार्तिक ने पहले कहा था कि वह ऐसी भूमिकाएं तलाश रहे हैं जो उन्हें चुनौती दें। जो वह कर चुके हैं उसे करने का कोई फायदा नहीं है। सत्यप्रेम की कथा एक म्यूजिकल लव स्टोरी है। भूल भुलैया 2 के बाद फिल्म में एक बार फिर से कार्तिक और कियारा की जोड़ी दिखाई देगी। फिल्म में कार्तिक सत्यप्रेम का किरदार निभाएंगे और कियारा कथा के किरदार में नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन समीर विद्वंस कर रहे हैं। नाडियाडवाला ग्रैंडसन के बैनर तले बन रही यह फिल्म अगले साल 29 जुलाई को रिलीज होगी। फिलहाल फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है। कार्तिक और कियारा की सत्यप्रेम की कथा काफी समय से चर्चा में थी। 31 जुलाई को कियारा के जन्मदिन के मौके पर कार्तिक ने फिल्म से दोनों का लुक भी शेयर किया था। पहले इस फिल्म का नाम सत्यनारायण की कथा था। इस नाम के लिए निर्माताओं पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगा था और फिल्म का विरोध हुआ था। इसके बाद फिल्म का नाम बदल दिया गया। फिल्मों में अपने किरदार के लिए अभिनेता अकसर कड़ी मेहनत से खुद को ढालने की कोशिश करते हैं। यह बदलाव सिर्फ लुक के लिए नहीं, बल्कि अपनी चाल–ढाल और संवाद में भी किए जाते हैं। बीते दिनों फिल्म पठान में शाहरुख खान के नए लुक को काफी प्रशंसा मिली है। इन दिनों चर्चित फिल्म लाइगर के लिए विजय देवरकोंडा ने भी ऐसा ही किया था। शेरशाह में खुद में किए बदलाव के लिए सिद्धार्थ मल्होत्रा को खूब सराहना मिली थी। कार्तिक की आने वाली अन्य फिल्मों की बात करें तो उनकी फिल्म शहजादा अगले साल वैलेंटाइन्स वीक में रिलीज होगी। इस फिल्म में उनके साथ कृति सैनन नजर आएंगी। उन्होंने हंसल मेहता की फिल्म कैप्टन इंडिया भी साइन की है।

सरगुन मेहता ने की अक्षय कुमार की तारीफ

पंजाबी अभिनेत्री सरगुन मेहता, जो सस्पेंस थ्रिलर, श्कटपुतलीय के साथ बॉलीवुड में अपनी शुरूआत करने के लिए तैयार हैं, ने हाल ही में फिल्म में बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार के साथ काम करने का अपना अनुभव साझा किया। सरगुन मेहता, जो फिल्म में एक पुलिस वाले की भूमिका निभाते हुए दिखाई देंगी, ने कहा, वह

अपने सह–अभिनेताओं को बहुत सहज महसूस कराते हैं और आप जानते हैं कि अक्षय कुमार के साथ काम करना बहुत आसान है।

एक बार जब आप सेट पर हों तो ऐसा नहीं लगता कि हे भगवान यह अक्षय कुमार हैं, वह आपको किसी अन्य सह–अभिनेता की तरह महसूस कराते हैं। उन्हें प्रशंसनीय कहते हुए, अभिनेत्री ने कहा कि अभिनेता जानते हैं कि किसी भी क्षण में कौन से बटन दबाने हैं, वह जानते हैं कि क्या कहना है और दूसरे व्यक्ति को डराना नहीं है और वह आपको सुधार करने लिए एक स्वतंत्र हाथ देते हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि हम सभी एक साथ डिनर करें, पूरी कास्ट ताकि एक अच्छा बंधन हो और अगले दिन सेट पर ऐसा न लगे कि ओह माय गॉड मैं किसके साथ काम कर रही हूं।

वाशु भगनानी और जैकी भगनानी, दीपशिखा देशमुख और पूजा एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित और रंजीत एम तिवारी द्वारा निर्देशित, श्कटपुतलीय 2 सितंबर से डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम करने के लिए तैयार है।

इन तरीकों से पढ़ाएं अपने बच्चों को, हमेशा रहेंगे अव्वल

आजकल छोटी कक्षाओं में भी सिलेबस बहुत ज्यादा है। होमवर्क का दबाव इतना है कि बच्चों के साथ ही पैरेंट्स को भी पढना पड़ता है। ऐसे में बच्चों को छोटी उम्र में ही पढने की आदत डाल दी जाए तो बच्चे और अभिभावक दोनों के लिए ही अच्छा रहेगा। इससे बच्चे न सिर्फ मेधावी होंगे बल्कि करियर के दबाव से होंगे मुक्त।

स्टडी चार्ट बनाएं–

बच्चे को होमवर्क कराने की शुरुआत कर रही हैं तो सबसे पहले टाइमटेबल सुनिश्चित करें और रोज उसी समय पढ़ाने बैठें। स्कूल से वापस आने के बाद बच्चों का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता। टीचर छोटे बच्चों को सिलेबस के हिसाब से कलर करना या एल्फाबेट लिखने जैसे काम होमवर्क में देते हैं।

तीन या चार में पढने वाले बच्चों के लिए पर्याप्त कॉपीवर्क दिया जाता है। ये वर्क भी उनके लिए काफी मुश्किल भरा होता है। जिनमें कई बार वे गलती भी करते हैं। ध्यान रहे कि ऐसे में आपको उन्हें डांटना नहीं, सिर्फ समझाना है। दिनभर भले ही आप दैनिक उलझनों में उलझी रहें पर होमवर्क कराते समय हल्के मूड में रहें और बच्चे को पूरा वक्त दें।

संयम से लें काम–

अक्सर बच्चों को लगता है कि उनको होमवर्क करना पड़ता है और बड़े लोग मजे में रहते हैं। ऐसे में वे कई बार न पढने की जिद कर बैठते हैं। अच्छा रहेगा कि आप उन्हें समझाएं। बच्चे तो बच्चे हैं वे अपना धैर्य खो देते हैं लेकिन आप संयम बनाएं रखें। उन्हें समझाएं कि सिर्फ नोटबुक में कुछ लिख लेने या स्कूल का काम पूरा कर लेने को ही होमवर्क नहीं कहते। होमवर्क का मतलब होता है हर दिन घर में भी कुछ नया सीखा जाए।

कूल रहे माहौल–

बच्चे को पढ़ाते समय कभी इस बात का दबाव न बनाएं कि यह कार्य अभी करना है या जरूर करना है। बेहतर रहेगा कि खेल–खेल में होमवर्क या कुछ नया सिखाने की कोशिश करें। ऐसे में उसमें पढने की रुचि विकसित होगी और वो कुछ ही दिन में खुद ही कहने लगेगा कि मुझे पढना है। जो विषय बच्चे को रुचिकर लगे उसे पहले पढ़ाएं, इससे वो बिना किसी दबाव के पढ़ेगा।

पढ़ते समय बच्चे को शांत माहौल दें जिससे उसका मन पढने में लगा रहे। यदि घर के अन्य सदस्य माहौल बिगाड़ेंगे तो उसका मन भी पढ़ाई में नहीं लगेगा।